चौहान

सूर्या

Surya

20 X 30

EXERCISE NOTE BOOK

Price Rs : 12.50

NAME ____________________

CLASS ______________ SEC. ______

SUBJECT ____________________

SCHOOL ____________________

वृक्ष उगाओ - पर्यावरण बचाओ

CHAUHAN
Industries, Ynr.

1) १२ राशि - मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ, मीन

2) ९ ग्रह - सू०, च०, मं०, बु०, गु०, शु०, श०, रा०, के०

3) २७ नक्षत्र - अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूला, पूर्वा षाढा, उत्तरा षाढा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पू० भाद्रपद, उत्तरा भाद्रपद, रेवती

4) नक्षत्र निकालना → मास दामोदर दुगन कर तिथि संयुक्त कर जोड कृष्ण पक्ष में अश्विनी स्वाती शुक्ल से ले।

चन्द्र राशि की संख्या → $\frac{\text{नक्षत्र की संख्या}}{2\frac{1}{4}}$

5) गणना एवं नाम के अक्षर →

६० घडी = १ नक्षत्र = ४ चरण

15 घडी = १ चरण

$2\frac{1}{4}$ नक्षत्र = १ राशि

समय मान →

६० पल = १ घडी = २४ मिनट

$2\frac{1}{2}$ पल = १ मिनट

$2\frac{1}{2}$ घडी = १ घंटा

६० प्रतिपल = १ विपल

६० विपल = १ पल

६० पल = १ घडी

६० घडी = १ दिन

खगोल मान →

६० प्रति विकला = १ विकला

६० विकला = १ कला

६० कला = १ अंश

३० अंश = १ राशि

भूमि मान →

①

੧੨ ਇੰਚ - ੧ ਫੁੱਟ	੨੦ ਉਂਸਵਾਂਸੀ - ੧ ਬਿਸਵਾ
੩ ਫੁੱਟ - ੧ ਗਜ਼	(੧੨ ਉਂਸਵਾਂਸੀ - ੧ ਮਰਲਾ)
੩੦ ਗੱਜ - ੧ ਮਰਲਾ	(੫੦ ਗਜ਼ - ੧ ਬਿਸਵਾ)
੨੦ ਮਰਲੇ - ੧ ਕਨਾਲ	੧੨ ਬਿਸਵੇ - ੧ ਕਨਾਲ

੮ ਕਨਾਲ - ੧ ਕਿੱਲਾ

੨੫ ਕਿੱਲੇ - ੧ ਮਰੱਬਾ

नाम के अक्षर

मेष - चला

वृष - इवो

मिथुन - कघङछहा

कर्क - होड

सिंह - मोटा

कन्या - टोपषणठ

तुला - रोता

वृश्चिक - तोनया

धनु - येधोभधफढ

मकर - भोजखगागी

कुम्भ - गसदा

मीन - दीपद्भसचाची

6) लग्न

मीने मेषे तृतद्वारे

चितद्वारे वृषकुम्भयो

मकरे मिथुने पंचमम्

शेष लग्नो घटी- घटी

सूर्योदय के समय सूर्य जिस राशि में होता है उसे लग्न कहते हैं।

मेष लग्न का रात में जाने की अवधि (मास में) - 3 घटी

दिन में - $\frac{3}{30}$ घटी

प्र→ 18 वैशाख को 6:45 पर सूर्योदय का ~~समय है~~ हुआ। तो ~~7:46~~ 7:46 में लग्न क्या होगा?

वैशाख में सूर्य की राशि - मेष

मेष लग्न का एक दिन में रात में जाने के अवधि - $\frac{3}{30}$

18 - $\frac{3}{30} \times \frac{18}{60}$

= 36 मिनट

मेष लग्न की कुल अवधि - 1 घंटा 12 मिनट

रात में - 36 मिनट

दिन में - 36 मिनट

6:45 + 0:36 तक लग्न - मेष

7:21 तक लग्न - मेष

इसी प्रकार 7:46 पर लग्न - वृष

लग्न के सहारे दिनमान →

सूर्योदय से 7 लग्न बाद - सूर्यअस्त

वैशाख मास के प्रथम दिन दिनमान - 30 घडी

ज्येष्ठ ——————— = 33 घडी

बढोतरी । दिन में - $\frac{3}{30}$ घडी

7) 12 मास → चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ, सावन, भाद्रपद, अश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन

8) जन्म कुण्डली → जन्म कुण्डली में प्रथम भाव - लग्न

जिस राशी में चन्द्रमा वह जातक की राशी होती है।

9) महादशा विचार →

	सू०	च०	मं०	रा०	गु०	श०	बु०	के०	शु०
दशा वर्ष	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०

यदि सू० की दशा में गु० की अंतरदशा निकालनी है तो

सू० के दशा वर्ष ६ × गु० के दशा वर्ष १६ = ९६

९६ = ९ मास 18 दिन।

जिस ग्रह की महादशा होती है सबसे पहले उसकी ही अंतरदशा होती है।

सू० - कृ, उफा, उषा०

च० - रो, हस, श्रव

मं० - मृ, चित्रा, धनि

रा० - आर्द्रा, स्वा, शत

गु० - पुन, विशा, पू०भा०

श० - पुष्य, अनु०, उभा

बु० श्ले, ज्ये, रे

श्रे० -

के० - मूला, मघा, अश्वि

शुक्र - पू० फा०, पू० षा०, भर

जिस व्यक्ति का जन्म जिस नक्षत्र में होता है। वहाँ से दशा शुरु होती है।

शेष पृष्ट 19 का विवाह करें। तथा घर के चौघट पर चाँदी के स्वतिक चिन्ह बनवा कर लगाएं,

(iv) घर में मयूर पंख का पंखा पवित्र स्थान पर रखें तथा शिवजी का ध्यान करते हुए प्रातः उठते ही सोने से पूर्व मयूर पंख द्वारा हवा करें।

(v) प्रत्येक संक्रांति को गंगा जल सहित गोमूत्र का छिडकाव सभी कमरों में करें।

---

10) भाव चक्र

1) प्रथम भाव →

इस भाव के द्वारा जातक के स्वरुप, जाति, आयु, विवेक, मस्तिष्क, शील, चिन्ह, शारीरिक चिन्ता, दादी, नाना तथा सुख दुख के बारे में विचार।

इस भाव में मिथुन, कन्या, तुला, कुम्भ राशि बलवान

(1)

2) द्वितीय भाव →

इस भाव से जातक के धन, कोष, कुटुम्ब, मणि-रत्न, मित्र, संचित पूँजी, आँख-कान, नाक (दायाँ), स्वर, सौंदर्य, संगीत, सत्य वादिता, क्रय-विक्रय, प्रेम, सुखोपभोग, पूँजी, अश्व कार्य, समधिन का विचार।

3) तृतीय भाव → इस भाव से भाई-बहन, पराक्रम, दास-कर्म, हाथ आभूषण, आयु, साहस, धैर्य, गायन, दया, भ्रम, योगाभ्यास, काम, दास-दासी, चाचा, मामा, भतीजा, दमा, श्वास, खाँसी, क्षय का विचार

4) चतुर्थ भाव → इस भाव से गृह ग्राम, चतुष्पद, वाहन, भूमि, मकान, निधि, ~~सम्पत्ति, अधिकरण~~, अन्तःकरण, दया, उदारता, परोपकार, छल-कपट, परिवारजन, इष्ट-मित्र, श्वसुर, नानी, पिता का धन, खेती, उद्यम, विधि, सुख-मान्य पदार्थ, विशेषतः माता के सम्बंध में विचार।

इसमें कर्क, मीन, मकर का उत्तरार्द्ध-बलवान।

इस भाव के कारक ग्रह- चं तथा बुध

5) पंचम भाव → सन्तान, विद्या, नीति, विनय, देव-भक्ति, प्रबंध-व्यवस्था, मामा का सुख, धन मिलने का उपाय, नौकरी छूटना, मूत्र पिंड, गर्भाशय, ~~[illegible]~~ का विचार

कारक → गु०

1

6) षट भाव →

रोग, शत्रु, झगड़े, बन्ध भय, लड़ाइ, क्रूर कर्म, व्रण आदि, जमीदारी, यश, गढ्ढा, ऊँट, भैंसा, गाय-बैल आदि पशु, गुदा स्थान, बुआ, मौसी, मामा, सौतेली माता का विचार।

कारक - शं०, मं०

7) सप्तम भाव →

पत्नी, जननेन्द्रिय, कामेच्छा, दैनिक आमदनी, व्यवसाय, अर्श रोग, भतीजा, नानी, छोटी यात्राओं का विचार

वृश्चिक राशि - बलवान

8) अष्टम भाव → आयु, मृत्यु, चिन्ता, व्याधि, गुप्तधन, झूठ, समुद्र यात्रा, संकट, लिंग, अण्डकोष के रोग, ऋण, किला, शत्रु भय, नाव चलाना, युद्ध, मूर्ति नाश, मनोदशा, ताऊ, समाधि का विचार।

कारक - श०

9) नवम भाव → धर्म, दान, पुण्य, तप, तीर्थ-यात्रा, भाग्योदय, पिता का सुख, दीक्षा, वापी, कूप, माली, देवर, बहनोई, भौजाई का विचार

कारक - सू०, गु०

10) दशम भाव → कर्म, ऐश्वर्य, भोग, राज्य, मान, उच्च पद, प्रभुत्व, नौकरी, व्यवसाय, नेतृत्व, ऋण, वर्ण, सास, आकाशीय, वृतांत का विचर

मेष, सिंह, वृष ~~का~~, मकर का पूर्वार्द्ध _ बलवान
धनु राशी का उत्तरार्द्ध _ बलवान (8)
कारक - सू०, बु०, गु०, शु०

11) एकादश भाव → आमदनी, लाभ, आभूषण आदि, वाहन, सम्पत्ति, लाभ, ऐश्वर्य, मांगलिक कार्य, धन-धान्य, चतुष्पद, विद्या-लाभ, परिवार दामाद, बड़े भाई का विचार। कारक ग्रह - गु०

12) द्वादश भाव → व्यय, हानि, रोग, दान, पाखण्ड, बन्धन कारावास, यात्रा शत्रु-क्रोध, त्याग, भोग, विवाद, इष्ट, कृषि कर्म, नेत्र (बायाँ) चोर, मोक्ष, बाहरी सम्बंध, चाचे का विचार। (9)
कारक ग्रह - शनि

11) ग्रह विचार →

~~सूर्य → यह गुलाबी वर्ण वाला, वृद्ध, शेष पृष्ठ 43 पुस्तक 'घर बैठे ज्योतिषी बनिए में'~~ (ज्योतिषी बनिए, घर बैठे ज्योतिषी)

	मार्गी/वक्री	उदय/अस्त	काल पुरुष	स्थान प्राप्त	स्वभाव	उच्च	नीच
सूर्य	मार्गी	उदय	आत्मा	राजा	उग्र क्रूर	मेष पूर्ण	उच्च से 7 आगे
चन्द्र	मार्गी	उ/ अस्त	मन	रानी		वृष 1 से 3	____
मंगल	मा/ वक्री	उ/ ,,	पराक्रम	सेनापति		मकर 1 से 28	____
बुध	____	उदय	वाणी	युवराज		कन्या 1 से 15	____
गुरु	____	उद/ अस	ज्ञान	मन्त्री		कर्क 1 से 5	____
शुक्र	____	____	कष्ट	मन्त्राणी		मीन 1 से 27	____
शनि	____	____	दु:ख	सेवक		तुला 1 से 20	____
राहु	वक्री	____	,,,,	कोई स्थान नहीं		वृष	____
केतु	वक्री	____	,,,,	____		वृश्चिक	____

	उच्च	मूल त्रिकोण	मित्र	सम	शत्रु
सूर्य	सिंह १ से ३० अंश	सिंह १ से २०	चं०, मं०, गु०	बु०	शु०, श, रा, के०
चन्द्र	कर्क पूर्ण	वृष ४ से ३०	सू०, बु०	मं, गु०, शु०, श	
मं०	मेष १ से ३० वृश्चिक पूर्ण	मेष १ से १८	सू०, चं०, गु०	शु०, श	बु०
बुध	कन्या २१ से ३० मिथुन पूर्ण	कन्या १ से १५	सू०, शु०	मं, गु, श	चं०
गुरु	धनु १४ से ३० मीन पूर्ण	धनु १ से १३	सू०, च०, मं०	श	बु०, शु०
शुक्र	तुला ११ से ३० वृष पूर्ण	तुला १ से १०	बु०, श	मं, गु	सू०, चं०
शनि	कुम्भ २१ से ३० मकर पूर्ण	कुम्भ १ से २०	शु, बु	गु०	सू०, चं०, मं०
राहु	~~कन्या पूर्ण~~ कन्या	कर्क			
केतु	मीन	मकर			

(शेष पृष्ठ ५५ पर

ग्रहों के बल → (स्थान) सर्वोच्च बली - उच्चस्थ, उच्च - मूल त्रिकोण, बली - स्वगृही, निर्बल - नीच तथा शत्रु। इसके अतिरिक्त अन्य बल भी हैं जो

	गति	कल्याण	पूर्ण दृष्टि	$\frac{1}{4}$	$\frac{2}{4}$	$\frac{3}{4}$	भाग्योदय	शरीरांग
सूर्य	१ मास	माणिक्य	७	३/१०	५/६	४/८	२२ से २४	सिर, नेत्र
चन्द्र	२¼ दिन	मोती	७	३/१०	५/६	४/८	२४ से २५	बुद्धि, रक्त
मंगल	१½ मास	मूँगा	७/४/८	३/१०	५/६	—	२८ से ३२	मज्जा
बुध	१ मास	पन्ना	७	३/१०	५/६	४/८	३२ से ३६	त्वचा, मुख
गुरु	१३ मास	पुखराज	७/५/६	३/१०	५ —	४/८	१६ से २४	चर्बी
शुक्र	१ मास	हीरा	७	३/१०	५/६	४/८	२६ से २८	वीर्य
शनि	२½ वर्ष	नीलम	७/३/१०	—	५/६	४/८	३६ से ४२	स्नायु
राहु	१½ वर्ष	गोमेद	७	३/१०	५/६	४/८	४४ से ५०	हड्डी
केतु	१½ वर्ष	वैदूर्य (लहसुनिया)	७	३/१०	५/६	४/८	४८ से ५०	चर्म
मुख्य		मोती						

	संबंध	कारक	पु०/स्त्री	~~[illegible]~~	स्वतन्त्र	भाव का कारक	
सूर्य	पिता	आत्मा	पुरुष	पित्त			
चन्द्र	माता	मन	स्त्री	वातकफात्मक, कफ			ज्योतिष
मंगल	भाई	बल	पुरुष	पित्त			शास्त्र विद्या
बुध	बंधु/मित्र	वाणी	नपुंसक	त्रिदोष			वाणी
गुरु	संतान	विद्या	पुरुष	कफ			
शुक्र	स्त्री	कर्म	स्त्री	वातकफात्मक			
~~शश~~ शनि	भृत्य	संघर्ष	क्लीव	वात			
राहु	शत्रु	दुःख	पुरुष	वात			सर्प विद्या
केतु	बाधा	कष्ट	पुरुष	वात			अशुभविद्य

१२) गर्भ में पुत्र होगा या कन्या

१) विषम राशि या नवांश में सू०, गु० हो तो पुत्र, सम राशि के नवांश या में शु०, च०, मं० — कन्या

२) विषम राशि या नवांश में श० — ~~कन्या~~ पुत्र, सम में तो कन्या

३) प्रश्न कुण्डली में, धर चन्द्र को छोड़कर शेष शुभ ग्रह विषम राशि में हो तो — पुत्र
अशुभ ग्रह सम — क०

४) प्रश्न समय चन्द्र नाड़ि चले तो कन्या, सूर्य नाड़ी चले तो पुत्र। यदि दोनों रुक कर चलें गर्भ नष्ट का भय

१३) धन लाभ विचार

१) धनेश यदि चन्द्र अथवा लग्नेश के साथ अपने स्थान में व उच्च को हो और शुभ ग्रह उसे देखें तो शीघ्र धन मिलता है।

2) यदि 1 श, 2 श, च, 6, 4, 2 और लग्न में स्थिर होकर। आपस में एक साथ स्थित हों अथवा आपस में देखते हों तो या युक्त हों तो बहुत धन देते हैं। बलवान शुभ ग्रह पंचम, केन्द्र, नवम, द्वितीय स्थान में स्थित हों तो शीघ्र ही धन लाभ करते हैं। किन्तु पाप ग्रह सम्पन्न हों

3) लग्न में शुभ ग्रह, पंचम में उच्च ग्रह, 11 भाव में उच्च का शुक्र तो भूमि, मकान का लाभ। लग्नेश अपने ग्रह का होकर लग्न को अपने स्वामी से दृष्ट हो तो राजा से धन प्राप्ति

4) यदि लग्न में धनेश, चतुर्थेश शुभ ग्रह युक्त होकर शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो धन देते हैं। यदि लग्न में च, लाभेश युक्त ग्यारहवें हो तो सुखपूर्वक धन का लाभ

5) यदि पूर्ण शुभ ग्रह केन्द्र में हों तो शीघ्र धन देते हैं। केन्द्र, त्रिकोण (5,9), आय (11) में पाप ग्रह बिना अधिकार धन की हानि

6) शुभ ग्रहों से दृष्ट लाभेश, जिस किसी भाव में स्थिर होकर लग्नेश, धनेश के साथ हो तो उसी भाव वाले मनुष्यों से धन लाभ होता है जैसे :- माता, पिता, भाई, स्त्री आदि के भाव में हो तो उन्हीं के द्वारा लाभ कहना, यदि अष्टम भाव में हो तो युद्ध झगड़े से, ग्यारहवें में मित्र से, बारहवें में खर्च से

१४) खोये पशु का विचार

जब कोई व्यक्ति पूछे कि मेरा खोया पशु मिलेगा या नहीं तो देखें कि उस दिन सूर्य किस नक्षत्र में था। सूर्य नक्षत्र से यदि ९ नक्षत्र हो तो खोया पशु वन में

१० से १५ खोया पशु मार्ग में आ रहा है
१६ से २२ घर आना चाहता है
२२ से २७ कभी वापस नहीं मिलेगा।

उपर्युक्त प्रश्न संख्या १२, १३ प्रश्न कुण्डली से हैं।

(१५) कालसर्प योग

यदि रा०, के० के बीच एक तरफ सभी सात ग्रह हों तो कालसर्प योग। व्यक्ति सभी सुख साधन उपलब्ध होने पर भी मानसिक तनाव ग्रस्त होता है। इस योग का प्रभाव पूरे देश पर पडता है राहु, केतु की दशा तथा अन्तरदशा में इसका विशेष प्रभाव होता है।

१ एवं ७ भाव से कालसर्प योग - वाला जातक साहसी, स्वावलंबी, शरीर रोग कष्ट, मानसिक तनाव ग्रस्त, संघर्ष अधिक, असंतोष

२ एवं ८ भाव → कुटुम्ब एवं धन उलझनों, अत्यंत कठिन परिस्थिति से गुजरना, गुप्त रोग की सम्भावना

३ एवं ९ भाव → के निर्मित योग से निकृष्ट भाई - बंधुओं से परेशानि धनार्जन होता है

४ एवं १० भाव → आराम कम, संघर्ष अधिक, माता, पिता परिवार से परेशानियां

५ एवं ११ भाव → जीवन का पूर्वार्द्ध भाग अत्यंत कठिन, कोई भी विशेष कार्य के समय रुकावट पैदा, संतान उत्पत्ति के बाद उन्नति

6 एवं १२ भाव → जातक के शत्रु दूर, खर्च, गुप्त शत्रु भय, दांत व नेत्र रोग भय

७ एवं १ भाव → बाधाऐं व्यवसाय में, कठिन परिश्रम द्वारा धन, आय का साधन। वैवाहिक जीवन में कलह

८ एवं २ भाव → मानसिक तनाव, क्लिष्ट रोग भय, घरेलू उलझनें

९ एवं ३ भाव → भाग्योन्नति में बाधाऐं, लाटरी द्वारा धन प्राप्ति के अवसर। नजदीकी बन्धु द्वारा विश्वासघात

(1)

१० एवं ४ भाव → संघर्ष के पश्चात, उन्नति, पिता के सुख में कमी

११ एवं ५ भाव → गुप्त साधनों द्वारा आय। पिता/संतान के कारण चिंता लाटरी द्वारा लाभ

१२ एवं ६ भाव → शरीर, नेत्र कष्ट, खर्च अधिक

इसके उपाय

२ (i) प्रत्येक शनिवार एक नारियल का तेल एवं काले तिलों का तिलक लगाकर मौली लपेटकर अपने शरीर से तीन बार घुमा कर 'ॐ भ्रीं भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः' मंत्र कम से कम तीन बार पढ़कर पानी में बहा देवें। इस प्रकार पांच शनिवार करें।

(ii) प्रत्येक शनिवार कुत्तों को दूध और रोटी डालना तथा गौओं एवं कौओं को तेल के छींटे देकर रसोई की प्रथम चापातियां डालना शुभ है

(iii) यदि वैवाहिक जीवन में बाधा आए तो पत्नी से दोबारा

शेष पृष्ठ ॥ पर

१६) यात्रा विचार →

शुभतिथि (भद्रादी दोष रहित) → दोनों पक्ष की २,३,५,७,१०,११। शुक्ल पक्ष की १३ तथा कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा

अति शुभ → अश्वि, पुष्य, अनु, हस्त।

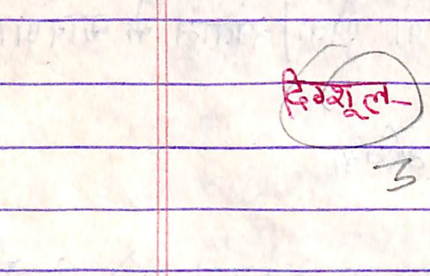
शुभ नक्षत्र - अश्वि, मृग, पुन, पुष, हस, अनु, श्रव, धनि, रेव

मध्यम नक्षत्र - रोहि, तीनों उत्तरा, पूर्वा, ज्ये, मूला, शत

शुभ दिन - 2
रवि - पूर्व, उत्तर, आग्नेय
सोम - पश्चिम, दक्षिण, वायव्य
मंगल - दक्षिण, पूर्व, आग्नेय
बुध - दक्षिण, पूर्व, नैऋत्य
गुरु - पूर्व, उत्तर, ईशान
शुक्र - पूर्व, उत्तर, ईशान
शनि - पश्चिम, दक्षिण, नैऋत्य

दिक्शूल - 3
सोम - पूर्व, उत्तर, आग्नेय
मंगल - उत्तर, पश्चिम, वायव्य
बुध - उत्तर, पश्चिम, ईशान
गुरु - दक्षिण, पूर्व, नैऋत्य
शुक्र - पश्चिम, दक्षिण, नैऋत्य
शनि - पूर्व, उत्तर, ईशान
रवि - पश्चिम वायव्य

योगिनी - पू, उ, आ, न, द, प, वा, ई पड़वा नवमी सेचली आई



1,9 - पूर्व
2,10 - उत्तर
3,11 - आग्नेय (दक्षिण - पूर्व)
4,12 - नैऋत्य (दक्षिण - पश्चिम)

5,13 - दक्षिण

6,14 - पश्चिम

7,15 - वायव्य (उत्तर-पश्चिम)

8,16 - ईशान (उत्तर-पूर्व)

शेष पृष्ठ 42 पर

17) चौघड़ियां (यात्रा) मान लो सूर्योदय = 6:00, सूर्यास्त = 18:00

समय	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
~~6:00 से~~ 7:30 6:00 से 7:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
7:~~30 से~~ 9:00 7:30 से 9:00	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
~~9:00 से 10:30~~ 9:00 से 10:30	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
10:30 से 12:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
12:00 से 13:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
13:30 से 15:00	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
15:00 से 16:30	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
16:30 से 18:00	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
18:00 से 19:30	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
19:30 से 21:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
21:00 से 22:30	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
22:30 से 24:00	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
24:00 से 1:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
1:30 से 3:00	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
3:00 से 4:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
4:30 से 6:00	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

शुभ चौघड़ियां - अमृत, शुभ, लाभ, चर बाकी अशुभ

रात्रिमान तथा दिनमान दोनों की 8, 8 चौघड़ियां।

खराब चौघड़ियां- उद्वेग, रोग, काल

१८) अग्निवास→

$\frac{\text{तिथि + वार + 1}}{4}$

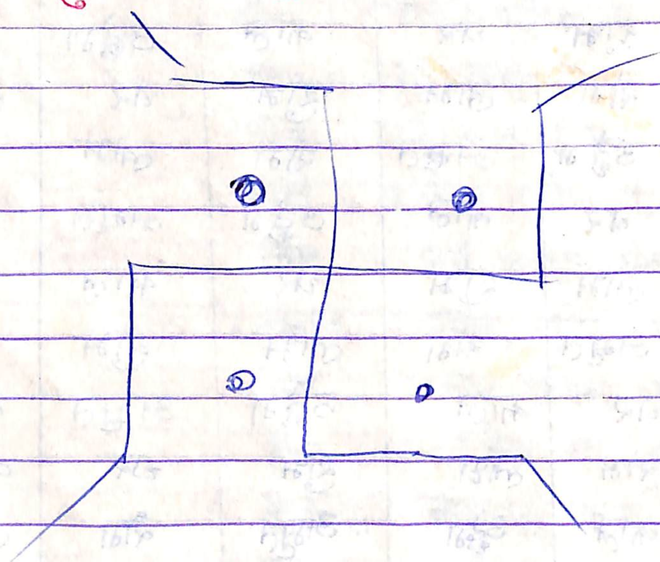
(आयुक्षय) यदि 1 बचे स्वर्ग में अग्निवास- पूर्णनाश

(धन क्षय) — 2 — पाताल — अर्धनाश

— 0,3 — पृथ्वी — सुखप्रद

ग्रह अग्निवास विचार पृष्ठ 36 पर

१९) जन्म कुण्डली के शुरू में→



ॐ श्री गणेशाय नमः। एक दंतो महा बुद्धि सर्व अज्ञो गणनायका।___

२०) धरती सोई, रजस्वला

सूर्य संक्रांति से ५,७,६,१०,२१,२४ धरती सोई

सूर्य नक्षत्र से ५,७,६,१२,१६,२६ धरती सोई

सूर्य सक्रान्ति से १,५,१०,११,१६,१८,१९ धरती रजस्वला इन दिनों मे कृषि, होम, गृहनिर्माण, कुंआ तलाब, पौधे का प्रारम्भ न करें।

२१) स्त्री विचार (योग) →

स्त्री विचार →

१) यदि कन्या की कुण्डली में ७ वें ग्रह के साथ शनि हो तो कन्या का विवाह बडे आयु में होता है।

२) यदि सू०, मं०, बु० लग्न में हो और गुरु १२ वें भाव में तो कन्या का विवाह दीर्घायु में।

३) जिस स्त्री के जन्म काल के सप्तम भाव में शुभ, अशुभ दोनों प्रकार के ग्रह हों तो उसके दो विवाह होते हैं।

४) यदि सप्तम भाव में शनि तथा बुध की युति हो तो पति नपुंसक

५) यदि ७ भाव में सूर्य तथा अन्य पाप ग्रह हों तो वैवाहिक सुख कम

६) ८ भाव में बुध होने से स्त्री के एक बार संतान होकर पुनः संतान में बाधा

विष कन्या योग →

१) शनिवार, आश्लेषा, द्वितीय तो विष कन्या।

२) मंगल, विशाखा, द्वादशी तो भी विष कन्या

३) यदि पंचम भाव में धन अथवा मीन राशि हो तथा गुरु पंचम भाव में स्थित हो अथवा पंचम भाव पर क्रूर ग्रह की दृष्टि हो तो स्त्री के अल्प से संतान।

२२) कुछ आम चीजें

नाम वार	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
नवीन वस्त्र धारण	शुभ	मध्यम	अशुभ	शुभ	शुभ	अति शुभ	अशुभ
नवीन आभूषण	शुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ
तेल लगाना	अशुभ	शुभ	अशुभ	विशे शुभ	अशुभ	शुभ	वि शुभ
हजामत	मध्यम	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम
नये जूता पहनना	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम
मुकद्दमा	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	मध्यम	शुभ

२३) गुमी वस्तु

$$\frac{४(\text{वर्तमान तिथि} + \text{वार} + \text{नक्षत्र की संख्या} + \text{प्रहर की संख्या})}{७}$$

१ बचे खोई वस्तु भूमि में गाडी
२ बचे नष्ट वस्तु किसी बर्तन में
३ बचे पानी में रखी
४ बचे भूमि के ऊपर स्थान में छिपाई
५ बचे भूसे में छिपाई
६ बचे गोबर में छिपी
७ बचे राख में छिपी

२४) गृहारम्भ

सबसे अच्छा योग- त्रिपुष्कर योग

(यदि द्विपुष्कर या त्रिपुष्कर में हानि या फिर - द्विपुष्कर योग

तो दुगुनी या तीन गुणी) या फिर - (+) का चिन्ह

या फिर - धरती जागती

१) मंगल युक्त हस्त, पुष्य, रेव, मघ, पू० षा०, मूला - मंगलवार - गृहारम्भ न करे

२) शनि युक्त पू० भा०, उ० भा०, ज्ये, अनु, स्व, भर - शनिवार - ————

३) घर का देवस्थान - ईशान (उत्तर-पूर्व) - अत्यंत शुभ

शौचालय (1) - ईशान - अशुभ

———— - नैऋत्य (दक्षि-पश्चि) - शुभ

जल संबंधी इकाई - ईशान - शुभ

———— - आग्नेय (दक्षि-पूर्व) - अशुभ

रसोई - ईशान - अशुभ

———— - आग्नेय - शुभ

भारी सामान - वायव्य (उत्तर-पश्चि) अशुभ

———— - नैऋत्य - शुभ

खाली स्थान - नैऋत्य - अशुभ

४) सूर्य, चं०, गु० अस्त, नीच, निर्बल न हो तथा रिक्ता (४/९/१४) न हो।

२५) पैंचका ~~५, सूर्य मिथुन, कन्या, मीन, धनु का न हो~~

अन्तिम पांच नक्षत्र पैंचकां में हैं। पैंचकों के समय दक्षिण की यात्रा, मकान, झोंपड़ी, दुकान की छत डालना, चारपाई बुनना, मुर्दा जलाना दीवार प्रारंभ, छत डालना, तांबा पीतल का संचय करना वर्जित है। यदि दशहरा धनिष्टा नक्षत्र का हो तो श्रवण में रावण को जलाते हैं क्योंकि धनिष्टा पैंचकां है

२६) दाग (शरीर पर)

1) यदि जातक के जन्म लग्न में मंगल तथा सप्तम भाव में गुरु शुक्र हो तो सिर में दाग

२) जन्म लग्न में मंगल, शु, चं हो तो जन्म से २रे या छठे वर्ष चोट से सिर में घाव

3) जन्म लग्न में शुक्र और आठवें भाव में राहु हो तो मस्तक या बाऐं कान में चिन्ह

4) यदि लग्न में गु०, सप्तम में रा० और अष्टम में पाप ग्रह हो तो जातक के बाऐं हाथ में चिन्ह या लग्न में गु० या शुक्र तथा अष्टम मे पाप ग्रह तो भी

5) ५ स्थान मे राहु या शुक्र और लग्न में शनि या मं० तो पाँव के तलवे में चिन्ह (दोनों में से एक ग्रह हो)

6) दूसरे भाव मे शुक्र, अष्टम भाव में सूर्य, तीसरे स्थान में मंगल तो जातक की कमर पर चिन्ह

शुभ ग्रह से चिन्ह, पाप ग्रह से घाव ये जन्म से या ग्रह की दशा में। यदि ग्रह अपनी राशि, नवांश में तो जन्म से या फिर दशा में। शेष पृष्ठ ४१ पर

२७) पितृ परोक्ष ज्ञान

जन्मकुण्डली में यदि लग्न को चन्द्र न देखता है तो बालक के जन्म समय उसका पिता घर में नहीं था, यदि सूर्य ८, ९, ११, १२ भाव में है चर राशि का और लग्न को न चं० देखता हो तो पिता जन्म दूसरे देश में। उन्हीं उपरोक्त स्थानों पर सू० स्थिर राशि में तो लग्न से पिता घर मे नहीं था। परंतु देश में था। द्विस्वभाव सूर्य तो मार्ग में था, परन्तु ये योग तब ही हैं जब चन्द्र न देखता हो लग्न को।

यदि बुध शुक्र के मध्य में चन्द्रमा होता

२८) माता पिता के लिए अरिष्ट योग तथा बालारिष्ट

पिता के सू० तथा दशम भाव। माता के लिए चन्द्र तथा चौथे घर से विचार।

यदि जातक की जन्म कुण्डली में सू० के साथ अथवा दशम भाव में पाप ग्रह बैठे हों या देखते हों या सूर्य पाप ग्रहों के बीच हो तो पिता को कष्ट। यदि सूर्य से ४/६/८ स्थान में पाप ग्रह, शुभ ग्रह कोई भी हो तो पिता को कष्ट।

चं० के साथ २/१२ स्थान में व ४/६/८ में क्रूर ग्रह हों और शुभ ग्रह न हो तो माता को कष्ट

~~यदि कुण्डली के प्रथम भाव~~

प्रथम ५ वर्ष तक मृत्यु- माता के पाप

जन्म से ८ वर्ष तक - ~~पूर्व जन्म के पाप~~ बालारिष्ट

८ से १२ - पूर्व जन्म के पाप

८ से २० - योगारिष्ट

२० से ३२ - अल्पायु

१) बच्चे की कुण्डली में ४,१० शुभ ग्रह - माता का सुखपूर्वक प्रसव
२) यदि लग्न या चन्द्र से ४,७ में क्रूर ग्रह- माता को प्रसव के समय अतिकष्ट
३) यदि लग्न या चन्द्र से ४,७ शनि, मंगल आदि क्रूर ग्रह की दृष्टि - आप्रेशन से प्रसव
४) लग्न से ६,८,१२ भाव क्रूर ग्रह। इन स्थानों में शुभ ग्रह न हो तथा गु०, शु० पाप ग्रहों के बीच हो तो बच्चे सहित माता को मृत्यु तुल्य कष्ट।

२६) दाग (शरीर पर)

1) यदि जातक के जन्म लग्न में मंगल तथा सप्तम भाव में गुरु/शुक्र हो तो सिर में दाग

2) जन्म लग्न मे मंगल, शु, चं हो तो जन्म से २रे या छठे वर्ष चोट से सिर में घाव

3) जन्म लग्न में शुक्र और आठवें भाव में राहु हो तो मस्तक या बाऐं कान में चिन्ह

4) यदि लग्न में गु०, सप्तम में रा० और अष्टम में पाप ग्रह हो तो जातक के बाऐं हाथ में चिन्ह या लग्न में गु० या शुक्र तथा अष्टम मे पाप ग्रह तो भी

5) ५ स्थान मे राहु या शुक्र और लग्न में शनि या मं० तो पाँव के तलवे में चिन्ह (दोनों में से एक ग्रह हो)

6) दूसरे भाव में शुक्र अष्टम भाव में सूर्य तीसरे स्थान में मंगल तो जातक की कमर पर चिन्ह

शुभ ग्रह से चिन्ह, पाप ग्रह से घाव ये जन्म से या ग्रह की दशा में। यदि ग्रह अपनी राशि, नवांश में तो जन्म से या फिर दशा में। शेष पृष्ट ४१ पर

२७) पितृ परोक्ष ज्ञान

जन्मकुण्डली में यदि लग्न को चन्द्र न देखता है तो बालक के जन्म समय उसका पिता घर में नहीं था, यदि सूर्य ८, ९, ११, १२ भाव में है चर राशि का और लग्न को न चं० देखता हो तो पिता जन्म दूसरे देश में। उन्हीं उपरोक्त स्थानों पर सू० स्थिर राशी में तो लग्न में पिता घर मे नहीं था परन्तु देश में था। द्विस्वभाव में तो मार्ग में था।

परन्तु ये योग तब ही हैं जब चन्द्र न देखता हो लग्न को।

यदि बुध शुक्र के मध्य में चन्द्रमा होती

२८) माता पिता के लिए अरिष्ट योग तथा बालारिष्ट

पिता के सू० तथा दशम भाव। माता के लिए चन्द्र तथा चौथे घर से विचार।

यदि जातक की जन्म कुण्डली में सू० के साथ अथवा दशम भाव में पाप ग्रह बैठे हों या देखते हों या सूर्य पाप ग्रहों के बीच हो तो पिता को कष्ट। यदि सूर्य से ४/६/८ स्थान में पाप ग्रह, शुभ ग्रह कोई भी हो तो पिता को कष्ट।

चं० के साथ २/१२ स्थान में व ४/६/८ में क्रूर ग्रह हों और शुभ ग्रह न हो तो माता को कष्ट

~~यदि कुण्डली के प्रथम भाव~~

प्रथम ५ वर्ष तक मृत्यु - माता के पाप

जन्म से ८ वर्ष तक - ~~पूर्व जन्म के पाप~~ बालारिष्ट

८ से १२ - पूर्व जन्म के पाप

८ से २० - योगारिष्ट

२० से ३२ - अल्पायु

१) बच्चे की कुण्डली में ४,१० शुभ ग्रह - माता का सुखपूर्वक प्रसव
२) यदि लग्न या चन्द्र से ४,७ में क्रूर ग्रह - माता के प्रसव के समय अतिकष्ट
३) यदि लग्न या चन्द्र से ४,७ शनि, मंगल आदि क्रूर ग्रह की दृष्टि - आप्रेशन से प्रसव
४) लग्न से ६,८,१२ भाव क्रूर ग्रह। इन स्थानों में शुभ ग्रह न हो तथा गु०, शु० पाप ग्रहों के बीच हो तो बच्चे सहित माता को मृत्यु तुल्य कष्ट।

५) लग्न में पाप ग्रह, चं० पाप ग्रह के साथ, शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो बालारिष्ट (लग्न या चन्द्र पर)

६) लग्न एवं अष्टम भाव में पाप ग्रह, बारहवें में क्षीणचं०, शुभ ग्रह न देखें तो बालारिष्ट विशेष रूप से

७) चं० ४/६/८/१२ भाव तथा दोनों ओर पाप ग्रह हो तो (चन्द्र पापाक्रांत बालक और) लिए अरिष्ट

८) यदि लग्न का स्वामी ७वें भाव, र०, रा०, मं० आदि पाप ग्रह युक्त हो तो एक वर्ष विशेष अरिष्ट।

२९) सौम्य तथा क्रूर कर्म

गु०, सोम, बु०, शु० - सौम्य - शुभ कार्य

रवि, मंग, शनि - क्रूर - पाप कार्य

सक्रांति के पहले बाद 16 घटी - पुण्य काल।

ग्रहण में ईश्वर का पूजन, जप पाठ आदि शुभ है।

३०) जन्म कुण्डली में ग्रह

१) ३,६,११ भाव - पाप ग्रह - शुभ

२) १,४,५,७,९,१० - शुभ ग्रह - अशुभ

३) ६,८,१२ भाव के स्वामी यहाँ बैठते हैं वे भाव अनिष्टकारक

४) ८ तथा १२ भाव के सभी ग्रह - अनिष्टकारक

५) किसी भाव का स्वामी - पाप ग्रह - तृतीय भाव - शुभ

—————— - शुभ ग्रह - —————— - मध्यम

६) रा०, के० अष्टमेश यहां बैठते है वहाँ बिगाड़ते हैं।

७) २,५,७ भाव - अकेला गुरु - अशुभ

८) गुरु - 6 भाव - शत्रुनाश

शनि - 8 भाव - दीर्घायु

होने से माता के

मंगल - १० भाव - भाग्य निर्माता

९) पू० चन्द्र, उदित बुध, शु, के, गु० - क्रमश एक दूसरे से अधिक शुभ
यदि ये शुभ ग्रह की राशी में हो तो - विशेष शुभ
पाप ग्रह ——————— अल्प शुभ

१०) १, ४, ७, १० भाव के ग्रह में अधिक शक्तिशाली। यदि स्वक्षेत्री पूर्णफल, मित्र क्षेत्री - ३/५, शत्रु - १/२

११) ५, ९ भाव - सदैव शुभ तथा विशेष प्रभाव

- १२) ९ भाव ५ भाव से बलवान

- १३) लग्न या लग्नेश शुभ तो अनेक दोष दूर

- १४) जिस भाव से २ तथा १२ भाव में पाप ग्रह - अशुभ, शुभ ग्रह - शुभ

१५) ३, ६, १०, ११ - रा, के०, श० - शुभ

१६) ११ भाव - क्रूर ग्रह - विशेष शुभ
——— - शुभ ——— - ———

१७) १, ४, ७, १० - गुरु - १ लाख दोष दूर - केन्द्राधिपति दोष
——— - शुक्र - १० हजार ——— - ———
——— - बुध - १ हजार ——— - ———

- १८) लग्न या लग्नेश - शुभ - अनेक दोष दूर

- १९) केन्द्र - पाप ग्रह - शुभ

- २०) ——— - शुभ ग्रह - अशुभ

- २१) २ तथा १२ भाव - अस्थिर अधिकार

- २२) १श से ५श, ५श से ९श, ७श से १० शुभ क्रमश

- २३) ३ से ६, ६ से ११ के स्वामी अशुभ क्रमश

- २४) २ तथा ११ भाव में ग्रह धन की वृद्धि

- २५) जो ग्रह जिस भाव का कारक है यदि वह अकेला उस भाव में बैठा हो तो उस भाव को बिगाड़ता है।

२१) तात्कालिक मैत्री व शत्रु

कुण्डली में ग्रह अपने से २,३,४,१०,११,१२ – तात्कालिक मैत्री

———— १,५,६,७,८,९ – ———— शत्रु

२२) ग्रहों की अवस्थाऐं

ग्रहों को निम्नलिखित 5 अवस्थाऐं होती हैं।

		विषम राशि में
ग्रह सम राशि में →	बाल अवस्था = 30-25 अंश	1-6 अंश
	कुमार अवस्था = 24-19 अंश	7-12 अंश
	युवा अवस्था = 18-13 अंश	13-18 अंश
	वृद्ध अवस्था = 12-7 अंश	19-24 अंश
	मृत अवस्था = 6-1 अंश	25-30 अंश

बाल ग्रह – $\frac{1}{4}$ फल

कुमार ग्रह – $\frac{1}{2}$ फल

युवा ग्रह – पूर्ण फल

वृद्ध ग्रह – कुष्ट फल

मृत ग्रह – निष्फल

२३) शनि विचार तथा ~~मारकेश~~ मृत्यु योग

शनि- वक्री अवस्था – शुभाशुभ फल में तीव्रता

यदि मंगलवार – १/६/१२ तिथि – कृतिका

बुधवार – २/७/१२ तिथि – आश्लेषा

गुरुवार – ३/८/१३ – मघा, हस्त

शुक्रवार – ४/६/१४ – आर्द्रा, धनिष्ठा

शनिवार – ५/१०/१५ – भरणी

इन तीन योगों में रोग का प्रारंभ हो तो मृत्यु तुल्य कष्ट

३४) गुरु-शुक्र अस्त विचार

गुरुअस्त, शुक्रास्त, अधिमास में वर्जित कार्य ÷

गृहारम्भ (निर्माण) एवं प्रवेश, कुआँ तालाब का निर्माण, व्रतारम्भ, व्रतोद्यापन, नामकरण, मुण्डन, यज्ञोपवीत, कर्ण-वेध, सगाई, विवाह, वधु प्रवेश, गोदान, देव प्रतिष्ठा स्थापन, अग्निहोत्र प्रारंभ, दीक्षा, सन्यास

३५) काल मुख- दाढ तथा नाडि

रोग के दिन नक्षत्र ~~के~~ से नाम का अक्षर ५/१३/२३ हो तो काल का मुख होता है। १०/१८ हो तो काल की दाढा जिस दिन काल का मुख या दाढ हो तो अत्यंत रोग ग्रस्त व्यक्ति की मौत हो जाती हैं। सूर्य का नक्षत्र, चन्द्र नक्षत्र, नाम नक्षत्र जिस दिन एक नाडि में उस दिन असाध्य रोगी की मृत्यु

३६) पांच स्वयं सिद्ध मूहुर्त ÷ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, अक्षय तृतीया, विजय दशमी, दीवाली, बसंत पंचमी। परन्तु ये विवाह के लिए नहीं है।

३७) जातक का शरीर

ग्रह	शुष्कादि	तत्व	कद
सूरज	शुष्क	अग्नि	मध्यम
चन्द्र	जल	जल	दीर्घ
मंगल	शुष्क	अग्नि	ह्रस्व
बुध	जलीय	पृथ्वी / ~~आकाश~~	मध्यम
गुरु	जलीय	तेज / आकाश	मध्यम ह्रस्व
शुक्र	जलीय	जल	ह्रस्व
शनि	शुष्क	वायु	दीर्घ
रा	शुष्क	वायु	दीर्घ

केतु — शुष्क — वायु — मध्यम

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
अग्नि	पृथ्वी	वायु	जल	अग्नि	पृथ्वी	वायु	जल	अग्नि
ह्रस्व	ह्रस्व	मध्यम	मध्यम	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	मध्यम

मकर	कुम्भ	मीन
पृथ्वी	वायु	जल
मध्यम	ह्रस्व	ह्रस्व

1) जन्म लग्न में जल राशि और उसमें जल तत्व का ग्रह तो जातक मोटा।
2) लग्न या लग्नाधिपति ग्रह जलराशिगत हो तो जातक का शरीर स्थूल एवं पुष्ट होता है।
3) यदि जन्म लग्न अग्नि तथा अग्नि तत्व के ग्रह तो मनुष्य शक्तिशाली पर देखने में दुबला
4) पृथ्वी राशि का लग्न और स्वामी ग्रह जल राशि में तो साधारणतया स्थूल
5) ———— पृथ्वी ———— स्थूल एवं दृढ़
6) ———— उसमें पृथ्वी तत्व का ग्रह तो जातक का छोटा कद
7) वायु ———— वायु ———— दुबला पतला
8) अग्नि/वायु ———— स्वामी ग्रह जल तत्व का तो शरीर स्थूल तीक्ष्ण
9) ———— पृथ्वी ———— हड्डियाँ मजबूत
इसके साथ ही लग्न की राशि ह्रस्व, दीर्घ, सम जिस प्रकार की हो उस प्रकार जातक की ऊँचाई समझनी चाहिए

इसी भांति दीर्घ अध्याय से ऊँचाई इसी भांति लग्न राशी के लग्न तथा लग्नेश ग्रह के अनुसार रूप रंग का निर्णय।

३६)

دھوب کا ساماں تنہا جیجول کا سر نز (بوژ - بھٹس)

دھوب کا ساماں : گوں ر دھوپہ جیتر لوواں جیرنا بوڈ بیلو سرولا، کاوں پیڑ لوکر بچھو شی لپیپی ، بوج یثر اندر جول -

بوژ ؛ بھٹس کا ستر : دڈ کنبرو نادوا کسر اوں نے کابوت ڈ ہاوں شاہ سار دکا بجیں ۔ بھسا ؛ بھوس - (लोर - कौनसी)

३८) गण्डमूल

निम्नलिखित छः नक्षत्र गण्डमूल हैं।

(I) अश्विनी → मेष राशि के एवं केतु इस नक्षत्र में उत्पन्न बच्चे का जीवन प्रायः संघर्षशील होता है। इस नक्षत्र के प्रथम चरण से पिता के लिए कष्टकारी, दूसरे चरण में फिजूलखर्ची, तृतीय में भ्रमणशील, चतुर्थ में कृश शरीर (अपने शरीर के लिए कष्ट) होता है।

(II) आश्लेषा → कर्क राशि के एवं बुध इस नक्षत्र के जातक प्रायः चंचल एवं चतुर बुद्धि वाले होते हैं। तथा परिवर्तनशील भी। प्रथम चरण में विशेष दोष नहीं। द्वितीय में पैतृक धन की हानि, तृतीय में माता-पिता / सास के लिए गण्डांत शूल तथा चतुर्थ में पिता के लिए अनिष्टकारी

(III) मघा → कर्क राशि के इस नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्पष्टवादी शीघ्र क्रुद्ध होने वाला, उद्यमी तथा धनवान होता है।

१ चरण - माता पिता को कष्ट या मातृ पक्ष की हानि, २ में पिता को परेशानी, ३ में शुभ फल, ४ में पिता, आदि के लिए शुभ

बुद्धि

ता शरीर पुष्ट

(iv) ज्येष्ठा → (a) वृश्चिक राशि के इस नक्षत्र का (एवं बुध) जातक सरल हृदय, तीक्ष्ण बुद्धि, धर्म परायाण एवं उन्नति के कार्यों के लिए अनेक बाधाओं से युक्त। प्रथम चरण → बड़े को अनिष्टकारक, द्वितीय चरण - छोटे भाई को नेष्ट। तृतीय चरण → पिता के लिए अनिष्ट, चतुर्थ भाव:- स्वंय अपने तथा अपने पिता के लिए अनिष्ट। इस नक्षत्र और मंगलवार के योग की कन्या बड़े भाई ...

(v) मूल → धनु में (एवं केतु) उत्पन्न तथा मूला नक्षत्र वाला जातक धार्मिक रुची वाला, उदार हृदय, मिलनसार, परोपकारी, धन-वाहनादि सुख से युक्त। प्रथम चरण हो तो पिता की हानि 2 में माता की हानि, 3 में धन नाश, 4 में शुभ। मूला नक्षत्र और रविवार दोनों के योग में उत्पन्न कन्या श्वसुर के लिए अनिष्ट (5)

(vi) रेवती - बुध में उत्पन्न यह जातक सर्वप्रिय, विद्वान, सुन्दर आकृति, तथा इस नक्षत्र तर्कशील तथा धनवान। 1 चरण - राजा के समान वैभवशाली, 2 चरण - मंत्री के समान वैभव। 3 चरण - जन्म से धनवान, 4 चरण - माता पिता के लिए अनिष्टकारक।

अभुक्त मूल नक्षत्र → ज्येष्ठा नक्षत्र की अंत की 3 घड़ियां तथा मूला नक्षत्र के शुरु की 3 घड़ियां अभुक्तमूल हैं। इसमें उत्पन्न बालक को बिना शांति करवाये न देखें।

उपाय → गण्डमूल में उत्पन्न जातक की नक्षत्र के 27 दिन पश्चात शांति। यदि शांति न हो तो जन्म दिन के निकट उसी नक्षत्र में दान-पूजन करवाना शुभ है।

10) घात विचार → घात में शुभ कार्य आरंभ न करें।

नोट → घात तिथि में सिंह का कर्क में है (क्रमश) तथा रवि का कर्क राशि का 2/7/12 है। तीर्थ, विवाह में घात का विचार नहीं।

राशय:	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घात मास	कार्तिक	मार्ग	आषाढ	पौष	ज्येष्ठ	भाद्र	माघ	अश्विन	श्रावण	वैशा	चैत्र	फाल्गुन
घात तिथि	१/६/११	५/१०/१५	२/७/१२	२/७/१२ (कटा: ३/८/१३)	३/८/१३ (कटा: ५/१०/१५)	५/१०/१५ (कटा: ४/९/१४)	४/९/१४ (कटा: १/६/११)	१/६/११ (कटा: ३/८/१३)	३/८/१३ (कटा: ४/९/१४)	४/९/१४ (कटा: ३/८/१३)	३/८/१३ (कटा: ५/१०/१५)	५/१०/१५
घात वार	रवि	शनि	चन्द्र	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	मंगल	गुरु	शुक्र
घात नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वा	अनु	मूल	श्रव	शत	रेव	भर	रोह	आर्द्र	आश्ले
घात योग ①	विष्कुम्भ	सुकर्मा	परिघ	धृति	प्रीती	सुकर्मा	अतिगंड	ब्रह्मा	वैधृति	गंड	व्याघात	वज्र
घात करण ②	बव	शकुनि	कौलव	नाग	बालव	कौलव	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तुघ्न	चतुष्पद
घात लग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
घात प्रहर	१	४	३	१	१	१	४	१	१	४	३	४
पु० घात चन्द्र	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	धनु	वृष	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ
स्त्री घात चन्द्र	मेष	धनु	धनु	मिथुन	वृश्चिक	वृश्चिक	मीन	धनु	कन्या	वृश्चिक	~~मीन~~ मिथुन	मेष

४१) नवग्रह पीड़ा हेतु यंत्र

८	१	६
ॐ ह्रीं राहवे नमः	ॐ ह्रीं सूर्याय नमः	ॐ ह्रीं शुक्राय नमः
३	५	७
ॐ ह्रीं भौमाय नमः	ॐ ह्रीं गुरवे नमः	ॐ ह्रीं शनये नमः
४		२
ॐ ह्रीं बुधाय नमः	ॐ ह्रीं केतवे नमः	ॐ सों सोमाय नमः

उपरोक्त यंत्र को नवग्रह स्तोत्र पाठ के उपरान्त अष्टगन्ध या भोजपत्र पर या अष्टधातु की प्लेट पर खुदवाकर दान पूजन करके अपने पास रखने से नव ग्रह का नेष्ट फल दूर। यह शुभ मुहुर्त कालीन में करें। चैत्र, प्रतिपदा, अक्षय, तृतीय, दशहरा, दीवाली की रात, अयन काल, ग्रहण काल, सायन संक्रांति काल, पूर्णिमा, गुरुपुष्य योग, त्रिपुष्कर आदि योग शुभ मुहूर्त कालीन हैं।

पृष्ट २२ का शेष

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्र का नक्षत्र गिनें यदि ३ या ३ से कम सूर्य अनिष्ट क्रमशः ३ जोड़ें।

ग्रह	सूर्य	बुध	शुक्र	शनि	चन्द्र	मंगल	गुरु	राहु	केतु
नक्षत्र	३ तक	६ तक	९ तक	१२ तक	१५ तक	१८ तक	२१ तक	२४ तक	२७ तक
फल	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ

१२) चोरी वस्तु विचार

अन्धाक्ष	रोहिणी	पुष्य	उ॰फा॰	विशाखा	पू॰षा॰	शतभिष		शीघ्र मिलेगी	पूर्वदिशा
सुलोचन	कृतिका	पुनर्वसु	पूर्वाफा॰	स्वाती	मूला	धनिष्ठा		नहीं मिलेगी	उत्तर
मध्याक्ष	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	श्रवण	उ॰ भाद्र	कभी नहीं मिलेगी	पश्चिम में अतिदूर
मन्दाक्ष	अश्विनी	मृगशिर	श्ले	हस्त	अनुराधा	उ॰षा॰	पू॰ भाद्र	बहुत यत्न बाद मिलेगी	दक्षिण

(i) यदि प्रश्न लग्न से पू॰च॰ हो और पर शुभ ग्रह की दृष्टि शीघ्र मिलेग

(ii) अति बलवान शुभ ग्रह ११वें भाव नष्ट वस्तु शीघ्र मिलती।

(iii) यदि सप्तमेश लग्न में तथा लग्नेश सप्तम में या चन्द्र तथा सप्तमेश दोनों अस्तगत हो तो चोर धन सहित पकड़ा जाएगा (2)

(iv) यदि स्थिर राशि का लग्न हो अथवा किसी भी लग्न में स्थिर नवांश या लग्न में वर्गोत्तम नवांश तो चोरी वस्तु घर के आदमी ने ली है। (3)

(v) यदि मेष, सिंह, धन लग्न में तथा सूर्य केन्द्र में ÷ चोरी वस्तु पूर्व में
— वृष, कन्या, मकर —— मंगल —— ÷ चोरी वस्तु दक्षिण में
— कर्क, वृश्चिक, मीन —— बुध —— ÷ —— पश्चिम में
—— मिथुन, तुला, कुम्भ —— शनि —— ÷ —— उत्तर
यदि एक से अधिक ग्रह हो तो जो ग्रह बली वही दिशा (4)

(vi) प्रश्न लग्न में चर राशि नष्ट वस्तु अति दूर, स्थिर ÷ गाँव मकान में
यदि सप्तमेश या सप्तम भाग में रा॰, के॰, श॰ आदि नीच ग्रह हों तो चोरी करने वाला नीच जाती का कृष्ण वाला, निर्जन स्थान में रहने वाला, दाढ़ी, मूँछ व केशधारी होता है। सप्तमेश वक्री होने पर या अष्टम मे सूर्य, मंगल होने पर भी नष्ट वस्तु नहीं मिलती। (5)

४३) विवाह

विवाह में प्रमुख अशुभ समय

१) गुरु अस्त ÷ तीन दिन पूर्व, पश्चात भी।
२) शुक्रास्त ÷ ———————— ।
३) सूर्य चन्द्रग्रहण ÷ ———————— ।
४) ग्रहणशूल ÷ उत्तराषाढा नक्षत्र में ग्रहण से तदोपरान्त ६ मास
५) श्राद्ध
६) भीष्म पंचक ①
७) पौष मास (सूर्य धनु का) (इन दस दोषों का कोई परिहार नहीं)
८) होलाष्टका। (८ दिन पहले - बाद)
१०) अधिमास ②
इसके अतिरिक्त १० मुख्य दोष
१) लता २) पात ३) युति ४) वेध ५) जामित्र ६) बुध पंचक ②

७) एकार्गल ८) उपग्रह ९) क्रांती साम्य १०) दग्धा तिथि

१० विवाह में त्रिबल शुद्धि ①

ग्रहबल	सूर्यबल	चन्द्र	गुरुबल
शुभ	३/६/१०/११	३/६/७/१०/११ १/२/५/९	२/५/७/९/११
पूज्य	१/२/५/७/९	—	१/३/६/१०
निंद्य	४/८/१२	४/८/१२	४/८/१२

2. षष्टाष्टमस्थ शुक्र का परिहार :- शुक्र यदि नीच या शत्रु होकर 6 या 8 भाव में हो तो दोषकारक। परंतु लग्नेश होकर नहीं दोषकारक।

3. त्रिकोणत या केन्द्र में गु० 11 सू० अथवा लग्न या चन्द्र वर्गोत्तम (राशि या नवांश में) हो तो विवाह मुहूर्त जनित सब दोषों का नाश।

4. लग्न शुद्धि विचार :- तिथि को शरीर, चन्द्र को मन, नक्षत्र आदि को शरीर के अंग तथा लग्न को आत्मा माना गया। अतः लग्न का विचार विशेष है।

विवाह लग्न का निश्चय करना हो तो लग्न में चं० तथा सूर्य, शनि, मंगल, राहु, केतु आदि क्रूर ग्रह न हों, लग्न से 6 में शु०, चं०, लग्नेश न हों तथा आठवें में चं०, मं०, बु०, गु०, शु० व लग्नेश न हों, सप्तम में कोई ग्रह न हो सातवें चं०, गु० समफल अर्थात चं०, गु० के दानादि से शांति।

लग्न में चं० 12वें शनि 3रे शुक्र, 10 मंगल (पापग्रह) दोषपूर्ण परंतु ये दानादि से शांत

5. ग्रहों के शुभ स्थान → विवाह लग्न काल से 6, 3, 8, 11 में सू०, 3, 6, 11 में रा०, के०, श०, 3, 6, 11वें मंगल, 2, 3, 11वें चन्द्र, 3, 6, 7, 8 स्थान को छोड़कर बाकी स्थानों में शुक्र, 7, 8, 12 स्थान छोड़कर अन्य में बु०, गु० शुभ होते हैं।

6. जन्म राशि से 3, 6, 11वां विवाह लग्न - शुभ

जन्म राशि या लग्न से 8, 12 स्थित लग्न या राशि - अशुभ

7. जन्म राशि या लग्न से अष्टम शुभ नहीं परंतु परिहार स्वरूप जन्म राशि या लग्न का स्वामी तथा विवाह लग्न का स्वामी ग्रह समान हो, मित्र क्षेत्री में, अथवा अष्टमस्थ लग्न राशि का स्वामी केन्द्र में हो अथवा गुर्वादि शुभ ग्रह से वीक्षित तो अष्टम लग्न का दोष दूर

कुर्दरि दोष ÷ लग्न से पाप ग्रह मार्गी होकर १२ भाव में, पाप ग्रह वक्री होकर द्वितीय भाव में तो कुर्दरि दोष। यह दोष दरिद्र, शोक, मृत्यु तुल्य कष्टकारी होता है।

परिहार ÷ कुर्दरि दोष कारक ग्रह नीच, शत्रु क्षेत्री अस्तगत हो तो इस दोष का परिहार। गु०, शु०, बु० इनमें से कोई भी शुभ ग्रह केन्द्र, त्रिकोण, २ वें ३ वें हो तो भी परिहार। कुछ अन्य दोषों के परिहार

1) अष्टम भौम का परिहार ÷ मंगल अस्त, नीच, शत्रु क्षेत्री हो तो परिहार। परंतु लग्नेश न हो

२) ६, ८ वें चन्द्र का परिहार ÷ चन्द्र ______________ या इन नवांशों में तो परिहार। परंतु लग्नेश होकर न हो। वृष/कर्क एवं पू० चन्द्र लग्न में दोषकारक नहीं।

३) ६, ८ शुक्र का परिहार ÷ (ये का पूरा)

४) यदि गु०, शु०, बु० केन्द्र त्रिकोण में, ११ भाव में चन्द्र, सूर्य अथवा सप्तमेश तो अनेक दोषों का नाश

ज्येष्ठ तथा भाई आदि विचार

ज्येष्ठ मास, वर, कन्या ये तीनों ज्येष्ठ हों तो विवाह वर्जित आवश्यकता परिस्थितियों में कृत्तिका से सूर्य निकलने पर विवाह हो सकता है। जेठे लड़के-लड़की के जन्म मास, नक्षत्र, दिवस पर विवाह अशुभ। सगे भाई-बहन का विवाह ६ मास के भीतर त्याग दें। किंतु यदि सम्वत् परिवर्तन हो जाए तो कोई दोष नहीं। विवाह के बाद ६ मास तक मुण्डन आदि शुभ कार्य न करें। दो सगे भाई का दो सगी बहनों से विवाह-अशुभ, दो भाई-बहनों का दो भाई-बहनों से विवाह वर्जित। जुड़वे भाई बहन के मांगलिक कार्य

एक मंडप पर शुभ है। यह ~~तीन पीढ़ि~~ 6 मास का निषेध केवल तीन पीढ़ी वाले मनुष्य के लिए है। कन्या के विवाह 6 मासतक पुत्र का विवाह शुभ। परंतु पुत्र के विवाह के पश्चात 6 मास तक कन्या का विवाह अशुभ है। एक वर के साथ दो सगे भाई-बहनों का विवाह वर्जित है।
~~दो सगे भाईयों / बहनों का विवाह 6 मासतक शुभ है।~~ मंगल संस्कार के 6 मास तक पितृकर्म, श्राद्धादि न करें। अत्यावश्यक परिस्थिति में एक मास पश्चात सूतक निवृति के बाद जप पाठ होम के बाद करें।
बड़े लडके/लड़की का विवाह जन्म मास, नक्षत्र, तिथि, लग्न में न करें। अनुज का विवाह जन्म मास में वर्जित नहीं। पुत्र शेष पृष्ठ पत्र पर

४४) माला योग

माला योग → यदि कुम्भ में बु०, गु०, और शुक्र ४, ७, १० वें स्थान में स्थित हों और शेष ग्रह भिन्न भावों में हों तो माला योग। यह जातक वस्त्राभूषणों से युक्त, एक से अधिक स्त्रियों से प्रेम, उच्च अधिकारी, चुनाव, कम्पीटीशन में प्रायः सफल।
शकट योग → जन्मकुण्डली में यदि लग्न और सप्तम भाव में समस्त ग्रह हों तो शकट योग। जातक स्वार्थी, चतुर, रोगी, दुष्ट, अल्पविद्या, ड्रावरी एवं संचलनादि कार्यों में प्रायः सफल। धन और बंधुओं के सुख की कमी।

पृष्ठ २८ का शेष

५, ८ शनि हो या उस पर शुक्र की दृष्टि तो गुदा के समीप तिल। यदि ५, ८ में शु० बु० अष्टम में गु०, लग्न या चतुर्थ में शनि तो पेट में चिन्ह १२ भाव में गुरु, ६ भाव में चन्द्र, ३ या ११ भाव में बुध तो गुदा स्थान पर चिन्ह। जातक के शरीर पर तिल आदि का ज्ञान लग्न, राशि, लग्न

स्थित द्रेष्कोण राशि, शीर्षोदय से भी किया जाता है।

४५) त्रिखल जन्म फल

तीन कन्याओं के पश्चात लडका उत्पन्न होने से तथा तीन लडकों के पश्चात कन्या उत्पन्न होने से त्रिखल दोष होता है। यह लडका, पिता, नानके पक्ष की हानि तथा कन्या माता के लिए कष्टप्रद। त्रिखल शांति हेतु सूतकादि के उपरांत किसी शुभ मुहूर्त में शुद्ध आसन पर पूर्वाभिमुख होकर संकल्पपूर्वक श्री गणपति पूजन एवं नवग्रहादि पूजापरान्त कलश स्थापित करते हुए उसके ऊपर ताम्र पात्र रखकर उसमें श्री विष्णु की स्वर्णीय मूर्ति (अभाव में ताम्र) पूजा करके रखें। फिर विधिपूर्वक त्रिखल शांति किसी सुयोग्य ब्राह्मण से करवा लें यदि न होती फिर बच्चे के जन्म दिन के आस पास त्रिखल पूजा करवा लेना शुभ है। दान में तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (सोना, चांदी, तांबा) तथा साथ में गुड, एक लाल परना व नारियल दक्षिणा सहित संकल्पपूर्वक बच्चे तथा माता का हाथ लगाकर मंदिर या ब्राह्मण को दान करें।

मंगलीक दोष व परिहार→

कुट पाक दोष

जिस कन्या की कुण्डली में १,४,७,८,१२वें स्थान में मंगल तो मांगलिक दोष। इसी भांति पुरुष की कुण्डली में

परिहार→① मांगलिक कन्या का मांगलिक लडके से विवाह से दोष दूर होता है तथा दाम्पत्य जीवन बढता है।

② लडके/लडकी की कुण्डली में जिस भाव में मंगल स्थित है तथा लडकी/लडके की कुण्डली में उसी स्थान पर कोई पाप ग्रह हो तो मांगलिक दोष भंग।

(3) मेष राशि का मंगल लग्न में, वृश्चिक का ४ भाव, मकर का ७ भाव, कर्क का ८ भाव, धनु का १२ भाव में, हो मीन का ७ भाव, कुम्भ का मंगल ८ भाव में तो मांगलिक दोष नहीं

(4) यदि २ भाव में चं०शु० का योग हो मं० गु० द्वारा दृष्ट हो, केन्द्रभावस्थ राहु हो अथवा केन्द्र में राहु - मंगल का योग तो भौम दोष नहीं

(5) न मंगली चन्द्र भृगु द्वितीय_ न मंगली पश्यती यस्य जीवः
न मंगली केन्द्रगतश्च राहु, न मंगली मंगल-राहु योगे

बलान्वित गुरु या शुक्र लग्न में, तो वक्री, नीचस्थ, अस्तगत शत्रुक्षेत्री मंगल उपरोक्त दुष्ट स्थानों पर होने पर भी भौम दोष नहीं

(6) इसी भांति केन्द्र, त्रिकोण में यदि शुभ ग्रह हो तथा ३, ६, ११ भाव में पाप ग्रह हो तथा सप्तमेश ग्रह सप्तम में ही हो तो मंगल दोष नहीं

(7) १, ३, ४, ७, ८, ११, १२ भाव मांगलिक दोष परंतु मंगल अपनेघर का १, ८ का हो, उच्चस्था, मित्रक्षेत्री आदि हो तो दोष नहीं।

(8) यदि वर-कन्या की कुण्डलियों में परस्पर राशिमैत्री हो_ गणैक्य हो, २७ गुण या अधिक का मिलान तो भौम दोष अविचारणीय है।

विवेचन:- मंगल अथवा मांगलिक दोष का निर्णय कुण्डली में सभी ग्रहों के पारस्परिक अनुशीलन के पश्चात ही करना चाहिए यदि किसी कुण्डली में मंगल अन्य ग्रहों के सहचर्य के योगकारक हो, उच्चस्थ या स्वराशिगत हो अथवा गुरु आदि शुभ ग्रहों की दृष्टि से प्रभावित हो तो मंगल शुभ कारक होता है। जैसे: मकर, मेष वृश्चिक, सिंह, धनु और मीन राशि को मंगल को शुभ माना जाता है तथा कर्क एवं सिंह लग्नों में मंगल केन्द्र त्रिकोणपति होने से मंगल

अशुभ न होकर योगकारक माना जाता है। (शेष पृष्ठ ८५ पर)

४६) कुछ योग तथा मुहूर्त →

1) वर्ष कुण्डली में अरिष्ट कारक योग →

मुंथेश यदि अष्टमेश ग्रह से युक्त होकर क्रूर ग्रह के द्वारा दृष्ट हो, तो उस वर्ष मृत्यु तुल्य कष्ट। परंतु यदि शु०, बु०, चं०, गु० आदि शुभ ग्रहों में से एक भी बलवान होकर केन्द्र या त्रिकोण में हो तो अनेक प्रकार के अरिष्टों का नाश तथा सुख की प्राप्ति

2) तरक्की व तबदीली के योग →

वर्ष लग्नेश एकादश भाव में और एकादशेश लग्न में व शुभ ग्रह युक्त और दृष्ट हो तो वर्ष में तरक्की व धन लाभ होगा।

नवम भाव में मुंथा हो और मुंथेश १,२,३,५,६,१०,११ वें भाव में चर राशि में शुभ ग्रह युक्त तो तरक्की व तबदीली के योग

3) वर्ष कुण्डली में विवाह सुख विचार →

सप्तमेश यदि बलवान होकर केन्द्र भावों में स्थित ~~होकर~~ एवं शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो स्त्री सुख एवं धन-धान्य की प्राप्ति होती है।

मुंथा या मुंथेश एवं सप्तमेश शु०, गु०, चं० युक्त (या दृष्ट) होकर केन्द्र-त्रिकोण भावों में पड़े तो उस वर्ष विवाह योग एवं धन सम्पदा के लाभ के योग।

4) विदेश यात्रा योग →

नवम भाव में मुंथा का आना और मुंथेश बारहवें भाव में पड़कर शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो विदेश यात्रा होती

है। वर्ष लग्न, कु के प्रथम, चतुर्थ एवं सप्तम भाव में चर राशियाँ आ जाएँ तथा इनके साथ शुभ ग्रह सम्बंध रखते हों, तो उस वर्ष विदेश यात्रा के प्रबल योग। शेष पृष्ठ-७२ पर

४८) मुंथा

कुण्डली में नवे ग्रहों के समान मुंथा की भी स्थापना की जाती है। मुंथा यद्यपि कोई ग्रह नहीं है परंतु उसका फल अन्य ग्रहों के समान ही है। मुंथा जन्म लग्न से प्रति एक वर्ष एक-२ राशि आगे चलती है। वर्ष कुण्डली में मुंथा ४/६/७/८ एवं १२ भाव में अशुभ फलदायक। यदि ४/६/७/८/१२ वें भाव में ~~अधिक~~ शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट तो अशुभ फल कम

४९) प्रश्न कुण्डली द्वारा फल विचार

१) यदि लग्न में चं, केन्द्र में शनि बुधास्त हो या चं० को मंगल, बुध पूर्ण दृष्टि से देखें तो प्रश्नकर्ता दुष्टमन वेहा

२) लग्न से पहला, चन्द्र से दूसरा, सूर्य से तीसरा, गुरु से चौथा

३) प्रश्न कुण्डली में लग्न, लग्नेश, चन्द्र- इनका विशेष महत्व है। इसलिए इनका बल आँकना आवश्यक है।

४) जो भाव अपने स्वामी से युक्त या दृष्ट हों या शुभ ग्रह उसमें बैठा हो तो फल की वृद्धि ५०) चमत्कारी मन्त्र-तंत्र

५०) [illegible] ①

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ڈاکٹنی شناکینی کشھالا نزاری ایکہ پیہر دو پیہر ساپنی
سدیر کو کیپ کرائے کو سوا ہاٹ رکشا کی نر سنگھ جی

ودھی - اس منتر کا جپ دیپاولی گرہن کال رسا بن سکرانتی
یتیا کال کے دن کرنے سے منتر سدھ ہو جائے گا - منتر کا جاپ
کرتے ہوئے روئی کو ۲۱ بار پھاڑا کریں تتھا سیر سے تک
دکھانا یکر اس منتر کا اچارن کرتے ہوئے ۲۱ کا نشان لگا کر اور
گُگل کو دھوئیں کا دے کر روئی کے کان میں پہنا دیں - اسے ہونے
دوش دور ہو کر کہنے والے کو

② لکشمی پراپتی منتر

"ॐ वं ज्रौ वं ए ह्रीं क्लीं कनकधारायै स्वाहा" इस मंत्र को 1 या 3 माला फेरें।

2

③ نو گرہ شانتی کے لیے منتر

ॐ ज्रौ सूर्य-सोमां-गावक-बुध-बृहस्पति-शुक्र-शनैचर-राहु केतव! सर्वे ग्रहा: मम सानुग्रहा: भवन्तु स्वाहा। ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा नम:।

इस मंत्र के 12500 जप पश्चात प्रतिदिन एक माला फेरें।

3

④ انشٹ - شکتی سنتان پراپتی

शुक्ल पक्ष के मंगलवार से प्रारंभ कर यह प्रयोग 7 या 11 मंगल करें। यदि सम्भव हो तो प्रतिदिन करें। हनुमान जी की प्रतिमा लेकर चंदन, पीला सिन्दूर, देसी घी से तिलक लगाएँ

"दारिद्र दु:खदहने विजयं विवादे, कल्याण साधनममंगलवारणं च। दाम्पत्यदीर्घ सुख सर्व मनोरथाप्तिम्, श्री मारुते: सहायता तिलकं तनोति॥"

~~इस मंत्र का~~ हर बार मंत्र उच्चारण के पश्चात ललाट से पूँछ तक तिलक लगाएँ, तत्पश्चात पूँछ से ललाट तक ~~यह~~ पुन: यही क्रिया सम्पन्न करें।

4

प्रतिदिन कम से कम १ बार इस मंत्र का जाप करें प्रति मंगलवार ऐसा करें। एक माला का जाप करें तथा हनुमान जी से प्रार्थना करें कि जिस प्रकार आपने माता सीता और श्री राम को मिलाया उसी प्रकार मुझे मेरे पति से मिलाएँ

(5) जिस कन्या के किसी कारण विवाहादि शुभ कार्यों में बारम्बार विघ्न पड़ें, उन्हें स्वयं नीचे लिखे मंत्र का सवा लाख की संख्या में जाप करना चाहिए। पाठारम्भ घर में अथवा किसी पंडित से अथवा माता के मंदिर में किसी शुभ मुहूर्त (दीवाली, गुरु पुष्य, अक्षय ३, बसंत ५, नवरात्रे आदि) से प्रारंभ करायें

(१) रक्ष रक्ष जगन्मातर्देवी मंगलचण्डिके। हारिके विपदां राशौ हर्षमंगलकारिके।
हर्षमंगलदक्षे च हर्षमंगलदायिके। शुभे मंगलदक्षे च शुभे मंगल चण्डिके ॥
मंगले मंगलार्हे च सर्वमंगलमंगले। सदा मंगलदे देवि सर्वेषां मंगलालये॥
इस श्री मंगल चंडिका स्तोत्र का पंचमुख दीपक के समक्ष पाठ करें।

वैवाहिक सुख में विलम्ब दूर हो

२) हे गौरि शंकरार्धांगि यथा त्वम् शंकरप्रिया।
तथा मां कुरु कल्याणि कान्तकान्ता सुदुर्लभाम ॥

शुक्ल पक्ष के सोमवार से प्रारंभ करके माता गौरी के मंदिर में कम से कम १ माला मंत्र का जाप प्रातः किसी सुनिश्चित समय पर करके प्रतिदिन १ फल अथवा मिष्ठान्न का भोग लगाना चाहिए। पाठ करते समय जल से पूरित पात्र नारियल आदि से ढक कर रखें।

(6)

ज्वालामुखी ध्यान :

ज्वालावलीतास्यकरो रुद्धां तां सरोज शंख सिमदा धरां च
सिंहासने स्थापित पादयुग्मां ज्वालामुखीं हृदयं स्मरामि

ज्वालामुखी मंत्र :

इस मंत्र का नित्य केवल 1 माला जाप करने से शत्रुओं का नाश।
'ॐ ह्रीं क्रीं ज्वालमुख ममसर्वशत्रून भक्षय-२ हुं फट् स्वाहा'

---

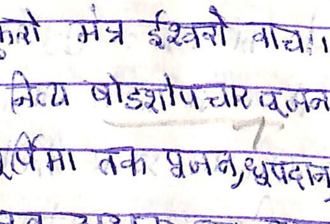
(7)

इस यंत्र का प्रयोग उस समय करना चाहिए, जब शत्रु अप्रत्यक्ष रूप से व्यथित कर रहा हो। प्रस्तुत यंत्र को भोजपत्र पर पीपल की लेखनी तथा अष्टगंध की स्याही से अंकित करें। यंत्रांकन के लिए अमावस की रात्रि सर्वो हो। यंत्रांकित कर उसे हनुमान जी के दाहिने ओर स्थापित कर दें। इसके पश्चात पूर्णिमा तक अधोलिखित मन्त्र से नित्य 108 बार मंत्र का जाप करें

"आओ वीर हनुमन्ता, अंजनी के पूता-वीर जाग्रित कीजे, मसान बाँध सातों जोगनी। बांध बावनवीर बांध, अहो लक्ष्मणवीर, मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।"

यन्त्र का नित्य षोडशोपचार पूजन करते रहें। गुग्गल से धूप प्रदान करते रहें। पूर्णिमा तक पूजन, धूपदान, मंत्र उद्दीपन करने के उपरान्त उसी दिन रजत अथवा ताम्र यन्त्र में भरकर यंत्र को कंठ या भुजा में धारण करें। इससे सभी बाधाओं का नाश होता है।

8



→ यंत्र

(8) ॐ नमो देव आदिरूपाय अमुकस्य आकर्षणं कुरु-2 स्वाहा

इस मंत्र के 1008 जाप करके अपनी अनामिका उँगली के रक्त से भोज पत्र पर मंत्र लिखें और भोजपत्र शहद में डुबा तो वह स्त्री आपकी ओर अवश्य आकर्षित होगी।

(9) श्री रामचरित्रमानस की निम्न चौपाई का पाठ करने से मुकद्दमे में विजय प्राप्त होती है:-

॥ पवन तनय बल पवन समाना। बुधि बिबेक बिग्यान निधाना॥
कवन सो काज कठिन जग माहीं। जो नहिं होइ तात तुम्ह पाहीं॥

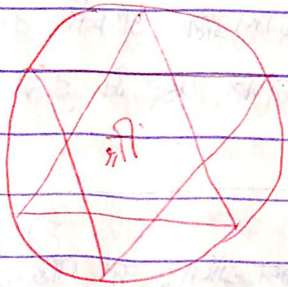
(10) "ॐ क्लीं देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥"

भगवान श्री कृष्ण के बालरूप की प्रतिमा अथवा चित्र के सामने नियमित दीप जलाकर संकल्पपूर्वक प्रतिदिन (एक या 3 माला) का पाठ करने से पुत्र प्राप्ति होती है। सवा लाख संख्या में पाठ करना शुभ व लाभदायक है। श्री कृष्ण जन्माष्टमी अथवा उपरोक्त किन्हीं शुभ मुहूर्त में पाठ करवाना चाहिए। पाठ स्वयं अथवा किसी सुयोग्य ब्राह्मण से करवाना चाहिए

(11) मंगल या शुक्र के दिन की चतुर्थ तिथि को इस यंत्र को ताम्र पात्र पर खुदवाकर प्रातः स्नान करना चाहिए। फिर सोलह बार श्री सूक्त का पाठ करना तथा सुगन्धित इत्र फूल अक्षत आदि से यंत्र की विधिवत पूजन कर गुड़ या खीर का भोग लगाना चाहिए। इसके बाद पूर्ण श्रद्धा के साथ ऋतु काल को छोड़कर प्रतिदिन नियम से 'श्रीं' का

१००० बार जप करना चाहिए

यंत्र →



و یا یار تلیں ور دی میتو بیتر (12)

इस यंत्र को लाल चंदन से दीवाली के दिन दुकान पर लिखने से व्यापार का लाभ होगा। साथ में ही श्री यंत्र ताम्र पात्र में रखें तो फल १०० गुना अधिक। तथा प्रतिदिन महालक्ष्मी के मंत्र का उच्चारण भी करना चाहिए

"ॐ श्री ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः"

७३	८०	२	७
६	३	७७	७६
७६	४	८	१
४	४	७५	७४

سرکاری کشنش تاں ٹا بیکوں تے ٹا بیتر (13)

यदि कोई कार्य सरकारी तंत्र द्वारा किया जाना है तथा उसमें अनावश्यक विलम्ब हो रहा है, जिससे काफी क्षति हो रही है उस दशा में निम्न मंत्र को नहा-धोकर शुद्ध आसन पर बैठकर धूप दीप जलाकर १०८ बार जाप करने से कार्य में सफलता।

"ॐ श्री श्रीं ॐ ॐ श्री हुं फट् स्वाहा।।"

بتی دِشّ لِن تِتا [illegible] ، رب تاں رتنتی [illegible] (14)

इस मंत्र का एक लाख जप करने से सिद्ध हो जाता है तथा आवश्यकता

पढ़ने पर 108 बार जाप करने राजदरबार में प्रतिष्ठा तथा पत्नी को पति का प्यार प्राप्त होकर वशीकरण मिलती है तथा जिस कार्य के लिए आदमी जाता है वह सिद्ध हो जाता है

मन्त्र → "ॐ नमो भास्कराय त्रिलोकात्मने। अमुक पति वश्यं कुरु-२ स्वाहा।।"
(जिस राज अधिकारी के पास जाना हो उसका नाम का मालूम हो तो पद का नाम लें।)

---

(15)

"ॐ ह्रौं जूं सः। ॐ भूर्भुवः स्वः। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। ह्रौं ॐ जूं सः, ॐ भूर्भुवः स्वः।"
श्रीमहामृत्युंजय के मन्त्र के सवा लाख संख्या में श्रद्धापूर्वक जप करने से अपमृत्यु, अकालमृत्यु, का भय नहीं रहता तथा दीर्घायु की प्राप्ति होती है। इस मंत्र का अनुष्ठान नाडि दोष, अशुभ ग्रह दशा, मांगलिक दोष, गण्डमूल, वैधव्यादि दोषों एवं असाध्य रोगों के निवारण हेतु सिद्ध माना जाता है। जप संख्या (सवा लाख) पूर्ण हो जाने पर दशांश हवन, उसका दशांश तर्पण तथा तर्पण का दशांश मार्जन करना चाहिए। तदुपरांत ब्राह्मण भोजन एवं दानादि करना शुभ है। जो इस मंत्र का पाठ नहीं कर सकते तो किसी ब्राह्मण से करवा लें।

(16)

"ॐ कात्यायनि महामाये। महायोगिन्यधीश्वरि।
नन्दगोपसुतं देवि। पतिं मे कुरु ते नमः।।"

---

(16)

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मी रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै। नमस्तस्यै। नमस्तस्यै नमो नमः।

وشیکرن منتر و دشمن کے لئے (بگلا مکھی منتر)

ॐ ह्रीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय।
जिह्वां कीलय बुद्धिं नाशय ह्रीं ॐ स्वाहा॥

अनुष्ठान हेतु मंत्र की संख्या लाख बताई गई है। जप से पूर्व पीले वस्त्र धारण करना, पीत पुष्पों से सविधि पूजन भी करना चाहिए।

(१४) कुछ तांत्रिक प्रयोग व टोटके

(1) کسی کرائے کا دوش دور کرنے کے لئے دھوپ، گندھک، (गुग्गल) گگّل، لال مرچ، لوبان، ہاتھی دانت، سانپ کی کینچلی، آدمی کے سر کے بال لیکر ان سب کو پیس کر کسی کرائے والے دکان کے پاس لے جا کر جلائیں اور اس کا دھواں دیا تو کسی کرائے کا دوش دور ہوگا

(2) وشیکرن بٹن — ابابیل کی جڑ اکھاڑ کر اسکی کیل بنا کر ایک ہزار آٹھ بار اس منتر کو [illegible] کر کے جس گھر پھینک دیا جائے وہ آدمی وش میں ہو جاتا ہے۔ اس منتر کا منتر ←

ॐ मदन कामदेवाय फट् स्वाहा

بسی وشیکرن کے لئے

(3) استری اپنے دائیں ہاتھ کو دودھ میں ملا کر تلک کرے تو بسی وش

(4) استری اپنے پاؤں کی جوتی کے برابر آٹا تول کر پکوائے [illegible]

(१०) जड़ी बूटियों से ग्रहों की शांति

जो लोग बहुमूल्य रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो उन्हें जड़ी बूटियां धारण करनी चाहिए

1 सूर्य पीड़ा कारक हो तो बेलपत्र की जड़ गुलाबी डोरे में रविवार को धारण करें

2 चन्द्र " —— खिरनी —— सफेद —— चन्द्रवार

3 मंगल —— अनन्तमूल —— लाल —— मंगलवार

4) बुध ———— विधारा ———— हरे ———— बुधवार ——
5) गुरु ———— नारंगी या केले ———— पीले ———— गुरु ——
6) शुक्र ———— सरपोंखा ———— सफेद ———— शुक्र ——
7) शनि ———— बिच्छू ———— काले ———— शनि ——
8) राहु ———— सफेद चन्दन नीले डोरे में ———— बुध ——
9) केतु ———— असगंध की जड आसमानी डोरे में गुरु ——

52) कुम्भ महापर्व

माघ मास की अमावस को जब गुरु वृष राशि में तथा सूर्य व चन्द्र मकर राशि मे हो, तो इलाहाबाद में कुम्भ पर्व होता है। यदि कोई प्रयागराज में जा ना सके तो वह नदी, तालाब, गृहादि में स्नान करे तो वह इस मंत्र का उच्चारण करे, " गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेअस्मिन संनिधिं कुरु।

53) व्रत तथा संवत्सर

1) व्रत/उपवास का संकल्प जल से भरे ताम्रपात्र को लेकर उत्तराभिमुख हो प्रातः काल मे करें।

2) नवीन व्रत का आरंभ या व्रत का उद्यापन मलमास, गुरु-शुक्र के अस्तकाल, भद्रा, क्रूरवार, अमावस, कुयोग (वैधृति, व्यतिपात), खण्डा तिथि (जो तिथि सूर्योदय से लेकर दोपहर तक न रहे) न करें।

3) जिस तिथि में सू॰ उदय अस्त हो, वह तिथि स्नान, दान, जपादि में सम्पूर्ण उपयोगी व प्रशस्त है। परन्तु जो तिथि आवश्यक नक्षत्र व योग से युक्त हो व यदि तीन मुहूर्त हो तो और भी श्रेष्ठ है।

4) दानादि में पूर्वाह्न देवों के लिए, मध्याह्न मनुष्यों के लिए अपराह्न काल पितरों का समय तथा सायंकाल राक्षसों का समय है। जिसका

जो कालहै तदनुसार पूजन, दानादि कर्म करने से यथोचित फल मिलता है। 5

५) व्रत के दिन क्षमा, दया, दान, शौच (शुचिता), इन्द्रिय निग्रह, देवपूजा, अग्निहोत्र, संतोष, अस्तेय (चोरी न करना) धर्म है। 6

६) व्रत में बार-२ जल पीना, दिन में सोना, पान चबाना, सहवास करने निषेध है। 7

७) व्रत में, तीर्थयात्रा में, अध्ययनकाल में तथा श्राद्ध में दूसरे का अन्न लेने से जिसका अन्न होता है, उसी को पुण्य प्राप्त होता है।

८) यदि किसी कारण व्रत स्वंय न हो सके तो पति, पत्नी, पुत्र, पुरोहित, भाई, यामिक, ब्राह्मण को प्रतिनिधि बनाया जा सकता है

कुछ मुख्य व्रत

१) दूर्वाष्टमी व्रत → यह व्रत भाद्रमास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी को होता है। उसका वंश नष्ट नही होता यदि अष्टमी ज्येष्ठा या मूला नक्षत्र युक्त हो तो इसे त्याग दें। इसके अतिरिक्त अगस्तस्य तारा उदित होने पर इसे त्याग दे। 8

२) श्री कृष्णजन्माष्टमी व्रत → इस व्रत से घर में लक्ष्मी स्थिर रहती है तथा सभी कार्यों में सिद्धि होती है। अर्धरात्रि को चन्द्र को अर्घ्य देकर कृष्ण जपादि करें। 9

३) दशहरा

४) दीवाली

सम्वत्सर → सम्वत्सर के दिन गणेशजी के मंगल चिन्ह के अंकित ध्वज घरों पर लगाने चाहिए तथा कटु नीम की कोमल पत्तियां और पुष्प लेकर, उनमें काली मिर्च, हींग, सेंधा नमक, अजवायन, जीरा, शक्कर या चीनी बराबर मात्रा में मिलाकर चूर्ण बनाकर ग्रहण करें। 10

शेष पृष्ठ 15 का

ग्रह	कनक	ताँबा	सोना	लाल गाय	गुड	घी	कमलादि
सूर्य	कनक	ताँबा	सोना	लाल गाय	गुड	घी	कमलादि
चन्द्र	चावल	चाँदी	—	श्वेत बैल	मिश्री	दही	श्वेत पुष्प
मंगल	मसूर	ताँबा	—	लाल बैल	गुड	घी	लाल कनेर
बुध	मूँग	कांस्य	—	शस्त्र	शक्कर	—	सर्व रंग पु०
गुरु	पीतधान्य	कांस्यपात्र	—	अश्व	लवण	—	पीले पुष्प
शुक्र	चावल	चाँदी	—	श्वेत घोडा	मिसरी	दूध	श्वेत —
शनि	उड़द	लोहा	—	काली गाय	कुलथी	तेल	काले —
राहु	सप्तधान्य	सीसा	—	घोडा	ताम्र पात्र	—	[illegible]
केतु	~~चावल~~ " "	लोहा	—	बकरा	नारियल	—	धूम्र पु०
मुख्या	चावल	कांस्यपात्र	—	श्वेत चन्दन	ऋतुफल	घृत	श्वेत पुष्प

					गुण	चरादि	वर्णजाति	रंग
सूर्य	रक्त वस्त्र	लाल चंदन	मूँगा	केशर	सत्त्व	स्थिर	क्षत्रिय	लाल
चन्द्र	श्वेत वस्त्र	श्वेत —	शंख	कपूर	—	चंचल	वैश्य	सफेद
मंगल	लाल —	लाल —	केशर	कस्तूरी	तम	चर	क्षत्रीय	लाल
बुध	हरा —	अनेक फल	हाथीदंत	कपूर	रज	द्विस्व	वैश्य	हरा
गुरु	पीत —	पीला —	धर्मग्रंथ	लवण शहद	सत्त्व	स्थिर	ब्राह्मण	पीला
शुक्र	सफेद —	सफेद चंदन	दही	सुगंधित द्रव्य	रज	चर	वैश्य	सफेद
शनि	काला —	काले जूते	भैंस	कस्तूरी	तम	स्थिर	शूद्र	नीला, काला
राहु	नीला —	नारियल	कंबल	खड्ग	—	चर	अन्त्यज	धूम्र
केतु	काला —	शस्त्र ध्वज	—	कस्तूरी	—	चर	शूद्र	—
मुख्या	श्वेत —	हाथी दंत	मुख्येश ग्रह	ग्रह अनुसार	xxx	xxx	xxx	xxx

तत्व	प्रकृति	धातु	रस	दिशा	वाहन	[illegible]	आयु
अग्नि	पित्त	सोना	तिक्त	पूर्व	अश्व	[illegible]	[illegible]
जल	वात, श्लै	चांदी	क्षार	प०, उ			
अग्नि	पित्त	ताम्र	कटु	दक्षि			
पृथ्वी	त्रिधातु	कांस्य	मिश्र	उत			
आकाश	कफ	सोना	मधुर	ईशा			
जल	वात, कफ	चांदी	अम्ल	दक्षि, पूर्व			
वायु	——, श्लै	लोहा	कषाय	पश्चि			
छाया	वायु	——	——	दक्षि			
——	——	——	——	उत्त			

बाधकराशि

	लग्न	बाधक राशि	बाधक ग्रह	अशुभ काल
1)	मेष	कुम्भ	श०	शनि दशा में
2)	वृष	वृश्चिक	मं०	मं० ——
3)	मिथुन	सिंह	सू०	सू० ——
4)	कर्क	वृष	शु०	शु० ——
5)	सिंह	कु०	श०	श० ——
6)	कन्या	वृ०	मं०	मं० ——
7)	तुला	सिं०	सू०	सू० ——
8)	वृश्चिक	वृ०	शु०	शु० ——
9)	धनु	कु०	श०	श० ——
10)	मकर	वृ०	मं०	मं० ——
11)	कुम्भ	सिं०	सू०	सू० ——
12)	मीन	वृ०	शु०	शु० ——

बाधक राशि जिस भाव की होती है, उस भाव मे बाधा लाती है। जिसका मेष लग्न है, उसके लिए एकादश भाव (क्योंकि कुम्भ है) न्यून फलदायक होगा तथा शनि बाधक होने से दशम भाव (मकर) भी न्यून होगा। यह शनि की दशा में अधिक होगा।

५२) ग्रहों की शान्ति के लिए रत्न (नग) एवं उपरत्न

१) सूर्य का माणिक्य (RUBY) →

पहचान विधि → असली माणिक्य लाल सुर्ख वर्ण का पारदर्शी, स्निग्ध - कान्तियुक्त, कुछ भारी होता है। इसे कांच के पात्र में रखने से हल्की लाल किरणें चारों ओर दिखाई देती हैं। यह लाल वर्ण का होता है। गाय के दूध में असली माणिक्य रखा जाए तो दूध का रंग गुलाबी दिखाई देगा। यह कनेर के पुष्प जैसा होता है।

धारण विधि → माणिक्य रत्न रविवार को सूर्य की होरा में कृतिका, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तरा षाढ़ा, रविपुष्य योग में सोना/तांबे की अंगूठी में जड़वा कर सूर्य के बीजमंत्रों द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित ~~करनी चाहिए~~ करके अनामिका में धारण करनी चाहिए। इसका वजन ३,५,७,९ रत्ति से कम होना चाहिए। सूर्य बीज मंत्र →

"ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः"

धारण करने के पश्चात गायत्री मंत्र की ३ माला का पाठ, हवन एवं सूर्य देव को विधिपूर्वक अर्घ्य देना चाहिए तथा ताम्र बर्तन, कनक, नारियल, मानक, गुड़, लाल वस्त्रादि सूर्य से संबंधित वस्तुओं का दान।

लाभ → विधिपूर्वक माणिक्य धारण करने से राजकीय क्षेत्रों में प्रतिष्ठा, भाग्योन्नति, पुत्र संतान लाभ, तेज बल में वृद्धि, हृदय रोग, चक्षुरोग, रक्त विकार, शरीर दौर्बल्यादि में लाभकारी।

मेष, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, धनु राशि अथवा इस लग्न वालों के लिए माणिक्य शुभ। जिनकी चन्द्र कुण्डली में सूर्य योगकारक होता हुआ भी प्रभावी न हो उनके लिए माणिक्य शुभ।

2) चन्द्र का मोती (PEARL),

पहचान ⇒ शुद्ध व श्रेष्ठ मोती गोल, श्वेत, उज्ज्वल, चिकना, चन्द्रमा के समान कान्तियुक्त, निर्मल तथा हल्का होता है। गोमूत्र को किसी मिट्टी के बर्तन में रात भर रखें यदि वह अखण्डित रहे तो सच्चा मोती है। पानी से भरे शीशे के गलास में मोती रख दिया जाए तो पानी से किरणें निकलती दिखाई दें तो वह शुद्ध मोती है। सच्चे मोती के अभाव में सफेद पुखराज चन्द्रकान्त मणि धारण करनी चाहिए। ~~इसमें मुक्ता-भस्म का भी उ~~

लाभ ⇒ असली शुद्ध मोती धारण करने से मानसिक शक्ति का विकास, शारीरिक सौन्दर्य की वृद्धि, स्त्री व धनादि सुखों की प्राप्ति। इससे स्मरण शक्ति भी बढ़ती है। इससे मानसिक रोगों, मूर्छा-मिरगी, उन्माद, रक्तचाप उदर विकार, पथरी, दन्तरोग में शांति। इसमें मुक्ता-भस्म का भी उपयोग हो सकता है।

धारण विधि → मोती चाँदी की अंगूठी में शुक्ल पक्ष के सोमवार को पूर्णिमा के दिन हस्त, रोहिणी, श्रवण नक्षत्र में शुभ मुहूर्त में धारण करना चाहिए।

मेष, वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक, मीन राशि व लग्न वालों के लिए शुभ। इसके अधिक फल के लिए चन्द्र की होरा में गंगा जल, कच्चा दूध व ताण्डुलादि में डुबोते हुए (ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः) के 11000 की संख्या में बीजमन्त्र का पाठ, पश्चात धारण करना चाहिए। इसके बाद चावल, चीनी, खीर, श्वेत फल, वस्त्रादि का दान शुभ।

मोती 2, 4, 6, 11 रत्ति का अनामिका या कनिष्ठिका ऊँगली में धारण करना चाहिए।

चन्द्रमा का उपरत्न - चन्द्रकान्त मणि (Moonlight Stone)

यह उपरत्न चांदनी जैसी चमक

लिए हुए चन्द्र का उपरत्न है। इसे हिलाने से इस पर एक दूधिया सी प्रकाश की रेखा चमकती है। यह मलाई के रंग का (सफेद और पीले के बीच) लाभ की दृष्टि से शुभ। इसे भी मोती की तरह धारण करना चाहिए। यह भी मानसिक शान्ति, प्रेरणा, स्मरण, शक्ति, प्रेम में सफलता।

3) मंगल का मूँगा (COROL)

पहचान → मूँगा मुख्यतः लाल, सिंधूरी, हिंगुल, गेरुआ होता है। मोटा, चिकना, चमकदार, सिंदूरी, सिंगरफ से मिलते जुलते रंग का मूँगा श्रेष्ठ है। असली मूँगे को खून में डाल दिया तो उसके चारों ओर गाढ़ा रक्त जमा होने लगता है। इसे यदि (गौ के) दूध में डाल दिया तो लाल रंग की झाई दिखने लगती है।

धारण विधि → शुक्ल पक्ष के मंगलवार को प्रातः मंगल की होरा में मृगशिर, चित्रा, धनिष्ठा नक्षत्र अथवा मेष, मकर या वृश्चिक के चन्द्र में सोने या ताँबे की अंगूठी में जड़वा कर बीज मंत्र द्वारा अभिमंत्रित करके अनामिका उंगली में ६, ८, १०, १२ रत्ती के वजन में धारण करना कल्याणकारी। धारणोपरांत मंगल स्तोत्र एवं मंगल का दान शुभ है। भौम बीज मंत्र → "ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः"

लाभ → इससे भूमि, पुत्र, भाई सुख, नीरोगता की प्राप्ति। रक्त विकार, भूत प्रेत बाधा, दुर्बलता, मन्दाग्नि, हृदय रोग, वायु कफादि विकार का नाश।

मेष, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर, कुम्भ, मीन लग्न या राशि वालों के लिए शुभ। यदि मंगल नीच तो सफेद मूँगा धारण करें।

4) बुध का पन्ना (EMERALD)

पहचान → यह हरे रंग का, स्वच्छ, पारदर्शी, कोमल, चिकना, चमकदार होता है। शीशे के गिलास में साफ पानी और पन्ना डाल दिया

जाऐ तो हरी किरणें निकलती हैं। हाथ लगाने पर कोमल तथा आँखों को शीतलता प्रदान करता है

धारण विधि → यह शुक्ल पक्ष के बुधवार को अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती, पू०फा० अथवा पुष्य नक्षत्र में बुध की होरा में सोने की अंगूठी में दांऐ हाथ की कनिष्टिका में धारण करना चाहिए इसके बीजमंत्र से अभिमंत्रित करा इसका वजन ३,५,७ रत्ति होना चाहिए।

बुध-बीजमंत्र- "ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः"।।

लाभ → इससे बुद्धि तीव्र होती है तथा स्मरण शक्ति बढ़ती है। यह विद्या बुद्धि, धन, व्यापार में वृद्धि के लिए लाभदायक है। यह सुख व आरोग्य कारक भी है। यह जादू-टोने, रक्त विकार, पथरी, बहुमूत्र, नेत्र रोग, दमा, गुर्दे के विकार, पाण्डु, मानसिक रोगों में लाभकारी।

14

वृष, मिथुन, सिंह कन्या, मकर मीन राशि के लिए शुभ

5) गुरु का पुखराज (Topaz)

पहचान → जो पुखराज स्पर्श में चिकना, हाथ लगाने पर कुछ भारी, पारदर्शी, चमकीला है तथा यहां किसी विषैले कीट ने काटा हो और वहां वह घिसाया जाऐ तो ~~असली पुखराज~~ जहर उतर जाती है। यह घिसने से और अधिक चमकता है। 24 घंटे कच्चे दूध में रखने के बाद यदि चमक में अंतर न हो तो पुखराज असली

धारण विधि → यह ३,५,७,१२ रत्ति के वजन का सोने की अंगूठी में जड़वा कर तर्जनी में धारण करें, सुवर्ण या ताम्र बर्तन में कच्चा दूध, गंगा जल पीले पुष्पों से ~~एवं पीले पुष्पों~~ से "ॐ ऐं क्लीं बृहस्पते नमः" के बीज मंत्र द्वारा १६ हजार की संख्या में अभिमंत्रित करना चाहिए। यह ना शुक्ल पक्ष के गुरुवार की होरा में अथवा गुरुपुष्य योग में या पुनर्वसु

15

विशाखा, पू० भा० नक्षत्र में कर्क, मीन, धनु के चन्द्र में ग्रहण करना चाहिए।
इसके पश्चात इससे संबंधी वस्तुओं का दान करनी चाहिए।

लाभ →

पुखराज धारण करने से बल, बुद्धि, स्वस्थ्य, आयु की वृद्धि होती है। वैवाहिक सुख, पुत्र-संतान कारक, एवं धर्म कर्म से प्रेरक होता है। प्रेत बाधा का निवारण एवं स्त्री के वैवाहिक सुख की बाधा को दूर करता है।

औषधी → इसके वैद्य के परामर्शानुसार केवड़ा एवं शहदादि के साथ देने से पीलीया, तिल्ली, पाण्डु, रक्त दन्त, मुख की दुर्गंधि, बवासीर, मंदाग्नि, पित ज्वर में लाभदायक

16

गुरु का उपरत्न → सुनैला → पुखराज। मूल्यवान होने के कारण सुनैला को उसके स्थान में लाया जा सकता है। यह हल्के पीले रंग का (सरसों जैसा) पीलापन लिए होता है। कई बार यह पुखराज से भी अधिक पीला होता है। इसके अधिकांश उपयोग पुखराज के समान ही होते हैं।
धारण विधि- पुखराज की।

6) शुक्र का हीरा (Diamond)

धारण विधि → शुक्ल पक्ष के शुक्रवार के दिन, शुक्र की होरा में, भरणी, पुष्य, पू० फा०, पू० षा० नक्षत्र एवं शुक्र वृष, तुला, मीन राशिगत हो तो 1 रत्ति या इससे अधिक वजन का हीरा सोने की अंगूठी में जड़वा कर शुक्र के बीज मंत्र (ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः) का 16 हजार की संख्या में जप करके शुभ मुहूर्त में धारण करना चाहिए। हीरा मध्यम ऊँगली में धारण करना चाहीए धारण करने के लिए शुक्र ग्रह से सम्बंधित वस्तुएं जैसे दूध, चांदी, दही, मिश्री, चावल, श्वेत वस्त्र, चन्दनादि का दान करना चाहिए। हीरा धारण करने के पश्चात 1 वर्ष

17

तक प्रभावशाली बना रहता है।

यह वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर, कुम्भ राशी के लिए लाभदायक।

पहचान → यह अत्यंत चमकदार, चिकना, कठोर, पारदर्शी होता है। हीरे गर्म पिघलते हुए घी में डाल दिया जाए तो घी तुरंत जमने लगता है। यदि इसे धूप में रख दिया जाए तो इन्द्रधनुष जैसी किरणें दिखाई देती हैं। तोतले बच्चे के मुँह में रखने से वह ठीक से बोलने लगता है। अंधेरे में यह जुगनू की भांति चमकता है।

लाभ → इसमें वशीकरण की विशेष शक्ति होती है। इसको पहनने से वंश-वृद्धि, धन-लक्ष्मी, सम्पत्ति की वृद्धि, स्त्री व संतान सुख की प्राप्ति, स्वास्थ्य ठीक तथा वैवाहिक सुख में भी वृद्धि होती है।

औषधी → हीरे की भस्म शहद-मलाई आदि के साथ ग्रहण करने से अनेक रोगों का लाभ होता है जैसे :- दौर्बल्यता, नपुंसकता, वायु प्रकोप, मन्दाग्नि, वीर्य, प्रमेह रोग, हृदय, श्वेत प्रदर विषैला रक्त, बच्चों में सूखा रोग, मानसिक कमजोरी के लिए वैद्य की सलाह अनुसार ग्रहण करना चाहिए।

शुक्र का उपरत्न-(1) फिरोजा → नीले आकाशीय रंग जैसा यह रत्न भूत, प्रेत, दैवी आपदा तथा आने वाले कष्टों से धारक की रक्षा करता है। यदि इसे कोई भेंटस्वरूप प्राप्त करके पहनेगा तो अधिक प्रभावशाली हल्के प्रखर चमकदार रंग का यह उत्तम होता है कोई भी कष्ट आने से पहले अपना रंग बदलता है। नेत्र रोग, सौंदर्य, सिर दर्द, विबादि रोगों में लाभकारी।

(11) ओपल (Opal) → यह भी शुक्र का अन्य उपरत्न है, इसे धारण करने से सदाचार, सदचिन्तन, धार्मिक कार्यों की ओर रुची रहती है।

(5) शनि का नीलम (SAPHIRE) →

पहचान → यह चमकीला, चिकना, मोरपंख के समान वर्ण, नीली किरणों से युक्त एवं पारदर्शी होता होता है। इसे गाय के दूध में डाल दिया जाए तो दूध का रंग नीला तथा यदि पानी से भरे गलास में रख दिया जाए तो नीली किरणें निकलती हैं। सूर्य की धूप में रखने से नीली किरणें दिखाई देंगी।

धारण विधि → नीलम 5, 7, 9, 12 अथवा अधिक रत्ति के वजन का, पंचधातु, लोहा/सोने की अंगूठी में शनिवार को शनी की होरा में एवं पुष्य, उ.भा., चित्रा, स्वा, धनि, शत नक्षत्र में शनि के बीजमंत्र (ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः) का 23000 की संख्या में अभिमंत्रित करना चाहिए। तत्पश्चात शनि की वस्तुओं का दान दक्षिणा सहित करना चाहिए।

लाभ → इससे धन धान्य, यश-कीर्ती, बुद्धि, सर्विस, वंश में वृद्धि तथा स्वास्थ्य का लाभ। नीलम शनि के साढ़ेसती के प्रभाव को समाप्त करता है।

औषधी → इससे दमा, क्षय, कुष्ट रोग, हृदय रोग, ज्वर, अजीर्ण, ज्वर, खांसी, नेत्र रोग, मस्तिष्क रोग, मूत्राशय रोगों का लाभ जब इसे औषधी के रूप में धारण किया जाए।

नोट → ध्यान रहे बहुधा नीलम 24 घंटे के भीतर ही प्रभाव शुरु कर देता है। यदि नीलम अनुकूल न बैठे तो भारी नुकसान। अतः परीक्षा के तौर पर कम से कम 3 दिन पास रखने से बुरे स्वप्न आदि, रोग उत्पन्न या कोई कष्ट उत्पन्न हो तो इसे न पहने

८) राहु का गोमेद (Zircon)

पहचान → यह साफ, भरी चिकना होता है तथा उसमें शहद के रंग की झाई दिखाई देती है। यह गोमूत्र के समान हल्के पीले रंग का, कुछ लालिमा लिए श्याम वर्ण होता है। यह उल्लू अथवा बाज की आँख के समान, परतदार नहीं होता है। इसे २४ घंटे तक गोमूत्र में रखने से गोमूत्र का रंग बदल जाता है।

धारण विधि → इसे शनिवार को शनि की होरा में, स्वा, शत, आर्द्रा रवि पुष्य योग में पंचधातु या लोहे की अंगूठी में जड़वाकर ५/६ रत्ती का राहु के बीज मंत्र (ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं राहवे नमः) द्वारा दाएँ हाथ की मध्यम उंगली में धारण करना चाहिए। इसके पश्चात हवन, एवं सूर्य भगवान को अर्घ्य प्रदान कर नीले रंग का वस्त्र, कम्बल, तिल, बाजरा दक्षिणा सहित दान करना चाहिए। जिनकी जन्म कुण्डली में राहु १, ४, ५, ७, ९, १० हो उन्हें गोमेद शुभ है। मकर लग्न के लिए भी यह शुभ है। इसका लाभ केतु से आगे दिया गया है

९) केतु का लहसुनिया (CAT'S EYE STONE)

पहचान → यह अंधेरे में बिल्ली की आंख की तरह चमकता है। यह ४ रंग में पाया जाता है। काली तथा श्वेत आभा युक्त लहसुनिया जिस पर यज्ञोपवीत के समान तीन धारियां खींची हैं। वह शुभ है। यदि इसे हड्डी के ऊपर रख दिया जाए तो २४ घंटे में हड्डी के आर-पार छेद। इसमें २½ या ३ सूत्र होते हैं जो बीच में इधर-उधर हिलते रहते (घूमते) हैं।

धारण विधि → यह बुधवार के दिन, अश्वि, मघा, मूल नक्षत्र में रवि पुष्य योग में पंचधातु की अंगूठी में धारण करना चाहिए। या कनिष्ठका

मे धारण से पूर्व इसको बीज मंत्र द्वारा अभिमंत्रित करना चाहिए जो ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः है। यह 4 रत्ति से कम वजन का नहीं होना चाहिए। इसे पंचधातु की अंगूठी में ~~अभिमंत्रित~~ धारण करना चाहिए। इसके पश्चात किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण को तिल, तेल, कम्बल, धूम्रवर्ण का वस्त्र, सप्तधान्य दक्षिणा सहित दान करना चाहिए। प्रत्येक 3 वर्ष पश्चात इसे नई अंगूठी में डाल लेना चाहिए।

लाभ → इससे भूत प्रेतादि की बाधा नहीं रहती। संतान सुख, धन की वृद्धि, शत्रु रोग का नाश

राहु के गोमेद से लाभ → इससे अनेक प्रकार की बीमारियों का नाश, धन सम्पत्ति सुख, सन्तान वृद्धि, वकालत, राज-पक्ष में उन्नति। शत्रु नाश में इसका प्रयोग

(23) वास्तु शास्त्र

शास्त्रों में लिखा है कि दूसरों के घर में (बिना दाम दिए) किए पुण्य कार्य भूमिपति को जाते हैं।

घर में खुली जगह → वास्तु शास्त्र के अनुसार घर के चारों ओर खुला स्थान इस प्रकार छोड़ा जाए कि पूर्व में सबसे अधिक खुला, उससे कम उत्तर में, उससे कम दक्षिण में तथा उससे कम पश्चिम में।

घर में वृक्ष → आम आदि फलदार वृक्ष शुभ हैं, कांटेदार वृक्ष चाहे फलदार ही हों अशुभ हैं। ऊँचे व घने वृक्ष दक्षिण पश्चिम में लगाने चाहिए। बड़ को पूर्व, गूलर को दक्षिण तथा पीपल को उत्तर में लगाना चाहिए। हमें तुलसी के 5 पत्ते नित्य खाने चाहिए। तुलसी को अग्नेय कोण में लगाना चाहिए इसे दक्षिण-पश्चिम में भी लगा सकते हैं। इसके लिए तुलसी चौरा बनाकर लगाने की परिपाटी है। स्थानाभाव में इसे गमलों में भी लगाया जाता है।

नींव में रखने योग्य पदार्थ →

1) तांबे की गडवी में चावल भरकर तथा सरसों, हल्दी भरें तथा गडवी को मौली तथा आम्र पत्तों से बाँध लें

2) 5 नई ईंटें

3) 5 पंचरत्नी तथा धार्मिक ग्रंथ [4]

4) 1 जोडी सर्प, सर्वौषधि [5] [6]

भाद्रपद, अश्वि, कार्ति में सर्प का मुख – पूर्व

फाल्गुन, चैत्र, वैशाख ———— – पश्चिम

ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण ———— – उत्तर

मार्गशीर्ष, पौष, माघ ———— दक्षिण

5) 5 कौडीयाँ, सिंदूर, 5 सुपारी साबुत [7]

6) दरिया या तालाब के किनारे की घास तथा 1 पाव कच्चा दूध (यदि सम्भव हो तो गंगाजल या वहाँ से लाई मिट्टी)

7) 1 नारियल

प्लाट में देखने योग्य बातें

1) जो प्लाट अनेक कोणों से युक्त हो वे अशुभ हैं।

2) वर्गाकार व आयताकार प्लाट शुभ हैं

3) सूर्यवेधी [9] → पूर्व से पश्चिम की ओर। धन हानि, कलह अशुभ

4) चन्द्रवेधी [8] → उत्तर से दक्षिण की ओर। धन कुल की वृद्धि, शुभ

5) उत्तर, पश्च, नैऋत्य, आग्नेय, एवं दक्षिण दिशाओं में उन्नत भूखंड धन, सुख, आयु में वृद्धि इसकी विपरीत दिशाओं में हानि
→ पूर्व, वायव्य, ईशान

5) पूर्व, उत्तर ईशान में नीची भूमि (अवनत) धन, संतान में वृद्धि तथा शुभ, आग्नेय, दक्षिण, नैऋत्य, पश्चिम वायव्य दिशाओं में नीची भूमि अशुभ

घर में पूजा गृह

पूजा घर उत्तर-पूर्व कोण में होना चाहिए उपासना घर में स्थापित मूर्ति उत्तर/पूर्व की ओर होना चाहिए। ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र, सूर्य, कार्तिकेय का पूर्व या पश्चिम मुख। शिव, विष्णु, ब्रह्मा का मुख किसी भी दिशा में। रुद्र, चामुण्डा, मातृगण, कुबेर, गणेश भैरव की स्थापना दक्षिण मुख तथा हनुमान जी का नैऋत्य मुख स्थापन करें।

अग्नि सम्बंधी वस्तुऐं जनरेटर, गीजर आदि आग्नेय कोण में शुभ।

वास्तु दोष ~~निवारण~~ हेतु उपाय

१) जब भी पानी पीऐं मुख उत्तर-पूर्व की ओर।

२) जब भी भोजन खाऐं थाली दक्षिण-पूर्व की ओर

३) जब भी सोऐं दक्षिण पश्चिम कोण में तो नींद गहरी और अच्छी आती है।

४) जब भी पूजा करें मुख उत्तर पूर्व, उत्तर-पश्चिम की ओर रहे।

५) ट्यूबवैल उत्तर पूर्व में लगाऐं

६) यदि पूर्व-उत्तर दिशा का भाग ऊँचा तो दक्षिण पश्चिम का भाग ऊँचा करवा दें।

७) स्वस्तिक चिन्ह (गणेश लक्ष्मी आदि के द्वार पर लगाऐं।

८) यदि भवन के सामने का उत्तर पूर्व दिशा का फर्श दक्षिण-पश्चिम से बने फर्श से ऊँचा हो तो दक्षि-पश्च का फर्श ऊँचा करवा दें। ऐसा न कर सके तो पश्चिम दिशा के कोने में प्लेटफार्म बनाऐं

~~९) दक्षि-पूर्व, उत्तर-पश्चि, दक्षि पश्चि कोण में कु~~

८) दक्षिण- पश्चिम में अधिक - दरवाजे खिड़कीयां अशुभ

ज्योतिष के कुछ योग

भूमि का कारक मंगल, धन का चन्द्र तथा भौतिक सुखों का कारक शुक्र है। अतः शुक्र की विचारणा आवश्यक है। नीचे कुछ ज्योतिष योग हैं

१) चतुर्थेश किसी शुभ ग्रह के साथ योग कारक केन्द्र- त्रिकोण (१,४,५,७,९,१०) भावों में स्थित होकर लग्नेश के साथ संबंध स्थापित हो तो धन परिपूर्ण घर

२) चतुर्थ भाव में चन्द्र- शुक्र का योग हो अथवा चतुर्थ भाव में कोई उच्च ग्रह हो, या चतुर्थेश केन्द्र त्रिकोण में हो, मंगल की स्थिति शुभ तो मकान शुभ

३) चतुर्थेश लग्न भाव में एवं लग्नेश चतुर्थ भाव में तो स्व- अर्जित धन से बनाए मकान का लाभ

४) लग्नाधिपति एवं चतुर्थेश - दोनों शुभ भाव में गृह सुख

५) नवमेश द्वितीय में तथा द्वितीयेश नवम में तो भूमि, मकान का पर्याप्त सुख।

६) मेष, ~~कर्क~~ ग्रह कुण्डली में ३,६,११ पाप ग्रह तथा ६,८,१२ शुभ ग्रह न हों

भूमि के प्रकार

(1) तपो भूमि → इसे याज्ञिक भूमि भी कहते हैं। इस पर मंदिर, देवालय का निर्माण शुभ।

(2) ब्राह्मणी भूमि → जहाँ की मिट्टी श्वेत वर्ण, स्पर्श में कोमल

नर्म, स्वाद में मधुर उस भूमि पर वास करने से चित्त शुद्धि, धन-धान्य, परिवार में सुख।

३) क्षत्रिय भूमि → लाल मिट्टी, कषैली, रक्त गंध से युक्त, स्पर्श में कुछ कठोर तो प्रशासन, राजकीय आदि के सुख।

४) वैश्य भूमि → हरे या पीले वर्ण की, स्वाद में खट्टी, शहद सदृश गंध युक्त भूमि बंगला, व्यवसाय में शुभ।

५) शूद्रा भूमि → काले रंग, स्वाद में कड़वी, मदिरा से सदृश गंध, स्पर्श में कंकर युक्त व कठोर। देह संस्कार के लिए उपर्युक्त।

दिशाओं की लम्बाई चौड़ाई के हिसाब से चार प्रकार की भूमि

१) गज पृष्ट → दक्षिण, पश्चिम, नैऋत्य, वायव्य में ऊंची उठी हुई। इस पर रहने से धन-धान्य, संतान, आयु की वृद्धि

२) कूर्म पृष्ट → मध्य से ऊँची और शेष भागों से दबी हुई। इस पर निवास करने से धन-धान्य, संतान, आरोग्य की वृद्धि

३) दैत्य पृष्ट → पूर्व, ईशान, अग्नेय, पर, से नीची भूमि पर वास करना अशुभ

४) नाग पृष्ट → पूर्व-पश्चिम की ओर लंबी, उत्तर-दक्षि से ऊँची, मध्य से नीची भूमि नाग भूमि। इस पर रहने से मानसिक व शारीरिक कष्ट तथा शत्रु वृद्धि। शेष पृष्ट 76 पर

शेष पृष्ट 65 पर

सर्वार्थ सिद्ध योग → अनुबंध करना, परीक्षा, नौकरी, प्रतियोगिता अथवा चुनाव के लिए आवेदन करना, क्रय-विक्रय करना, यात्रा या मुकदमा करना, भूमि सम्पत्ति, वस्त्र-आभूषण का क्रय विक्रय आदि

अमृत सिद्ध योगों → में स. सिं. योगों के अतिरिक्त प्रेम-विवाह करना, सकाम अनुष्ठान करना

रवि योग → स. सि. योगों की भांति शुभ कार्य तथा यदि कोई दुष्ट योग भी हो तो रवि योग द्वारा नाश

द्विपुष्कर योग → बहुमूल्य तथा उपयोगी पदार्थ जैसे जमीन-जायदाद, हीरे-जवाहरात, स्वर्ण चाँदी के आभूषण, कार ट्रक, स्कूटर, गाय-भैंस का क्रय, नवीन उद्योग की स्थापना तो दुगुना लाभ होता है यदि हानि तो दुगुनी

त्रिपुष्कर योग → 3 गुना लाभ तथा 3 गुनी हानि।

मूहूर्त →

1) मुण्डन संस्कार मुहूर्त → जन्म से 1, 3, 5, 7 विषम वर्षों में शुभ मुहूर्त में उत्तरायणगत सूर्य से बालक की जन्म राशि व जन्म नक्षत्र ग्राह्य होता है, परंतु ज्येष्ठ लड़के का चूड़ाकर्म ज्येष्ठ तथा जन्म मास में न करें। राशि व लग्न से अष्टम लग्न ग्रहण न करें।

~~2) शिलान्यास (नींव गृह) निर्माण का आरंभ वृष चक्र बैल की आकृति बना कर उसे 4 भागों में बांटो यदि सूर्य मघा नक्षत्र में हो तो~~

2) वधू प्रवेश व मुकलावा →

विवाह के बाद प्रथम दिन पति के घर में प्रवेश करने को वधू-प्रवेश कहते हैं। विवाह दिन से 16 दिन तक वधू प्रवेश हो तो सम दिनों में तथा 16 दिन के बाद विषम दिनों में शुभ है।

वधू प्रवेश के पश्चात वधू जब पिता के घर से लौटकर द्वारा पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं। द्विरागमन के लिए सम्मुख तथा दाऐं शुक्र वर्जित है। द्विरागमन 16 दिन के भीतर हो तो शुक्र अपेक्षित नहीं। दीपाली को द्विरागमन प्रशस्त है। शुक्र जिस दिशा में उदय होता है वह शुक्र की दिशा। यदि शुक्र दक्षिण में हो और हमें पूर्व में जाना

है तो शुक्र दोष होगा।

मूर्ति स्थापन

① विष्णु की मूर्ति स्थापना वामन जयंती, मतस्य जयंती, अक्षय तृतीया मे
② गणेश प्रतिमा की स्थापना रेवती नक्षत्र, मंगलवार, भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी, गणेश जयंती को
③ श्री राम की मूर्ति स्थापन मे उत्तरायण मासों के अतिरिक्त, अक्षय तृतीया रामनवमी, विजयदशमी, दीपावली पर शुभ।
④ शिवजी की मूर्ति श्रवण, फाल्गुन मास की चतुर्दशी (शिवरात्री) विशेष है।
⑤ दुर्गा माता, सरस्वती आदि की मूर्ति नवरात्रे, अष्टमी / नवमी, मूला नक्षत्र, बसंत पंचमी को शुभ। दक्षिणायन (गुरुविस्ताक्ष २ दिन) मास शुभ
⑥ हनुमान जी की मूर्ति स्थापना चैत्र शु० पूर्णि, कार्तिक कृष्ण चौदस, मंगल या रविवार, आर्द्रा नक्षत्र को शुभ

कोई व्यापार या कारखाने का मुहूर्त

हस्त, पुष्य, तीनों उत्तरा, चित्रा नक्षत्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, २, ३, ५, ७ ११, १२ तिथि, शुक्र गुरु उदय पश्चात्, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर

मूर्ति खरीदने का मुहूर्त

मास → वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ (प्रवि तक), मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन

शुभ तिथि → प्रतिपदा (कृष्ण पक्ष) २, ५, ६, १०, ११, १५ शुक्ल तथा कृष्ण

शुभ नक्षत्र - मृग, पुनर्व, आश्, मघा, चित्रा, अनु, तीनों पूर्वा, मूला, रेव, शत, स्वा

शुभ वार - सोम, बुध, गुरु, शुक्र

प्रेम विवाह

शुभ तिथियां — १(कृ), २, ३, ५, ६, ८, १०, ११, १३, १५ (दोनों पक्ष)

शुभ वार → रवि, सोम, बुध, शुक्र, शनि

शुभ नक्षत्र - अश्, कृति, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उ, धनि

रामायण आदि कथा के प्रारंभ का मुहूर्त

तिथि → शुक्ल पक्ष की २,३,५,७,१०,११,१३,१५

वार → सूं, चं, बु, गु, शु।

नक्षत्र → अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, तीनों पूर्वा उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, श्रव, धनि, शत, रेव

चुनाव में खडे रहने का मुहूर्त

तिथि →), २, ३, ५, ६, १०, १२, १५ (शुक्ल, १ (कृ)

वार → चंद्र, बु०, गु०, शु०,

नक्षत्र → अश्वि, रोह, पुन, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठ, रेव,

शुभ लग्न → (ई.) २, ४, ७, १०

विशेष → केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह हों, ६, ३, ११ वें पाप ग्रह हों, लग्न लग्नेश पर शुभ ग्रह की दृष्टि, बुध, शु०, गु० उदित हों। चन्द्र तथा प्रत्याशी की राशि मुहूर्त वाले दिन-घंटे, आठवें तथा १२वें न हो

संसद् में शपथ स्थिर लग्न में प्रशस्त

~~५.१) घर बैठे ज्योतिषी बनिए पुस्तक में~~

1) Ls-14, Page 161 (ज्योतिष रोग व इलाज)

2) Page 158 (मुहूर्त विचार)

3) Ls-13 Page 150 (ग्रहयुति फल)

4) Ls-12 Page 138 (भावेश (द्वितेश का प्रथम भाव))

5) (विभिन्न भावों में शुभ तथा अशुभ ग्रह) Page 135 Ls-11

6) (ग्रहों का विभिन्न भाव तथा राशि फल) Page 107 Ls-10

7) (ग्रहों का उच्चादि का प्रभाव) Page 101 Ls-9

8) (जन्म लग्न तथा जन्म राशि फल) Page 94 Ls-8

9) (जन्म का दिन तिथि मासादि फल) Page 87 Ls-7

8) (भावों की विशिष्ट संज्ञाएं) Page 77

9) (भावों के विचारणीय विषय) Page 78

10) ~~6-5~~ (पूरा)

~~षोडश संस्कार इस प्रकार है~~

पृष्ट 72 का शेष

वास्तु भूमि का शुभाशुभ विचार→

क) गृहादि निर्माण हेतु जिस भूमि का शुभाशुभ देखना हो तो, शाम के समय वहाँ पर भूमि पूजन करवाने के पश्चात वहाँ अपने एक हाथ लम्बा, चौड़ा, 1½ हाथ गहरा गढा खोद कर उसे जल से भर दें। प्रातः काल आकर उसे देखने पर यदि वह गढा भरा हुआ हो तो भूमि शुभ है। यदि पानी न हो तो मध्यम यदि पानी न हो और उसके आस-पास की मिट्टी फटी हो तो भूमि अशुभ

ख) इस गढ्ढे (उपर) की खुदाई के समय यदि पत्थर ईंट, ताम्बा, पात्र, धन, द्रव्य मिले तो शुभ है। यदि कपाल, हड्डी, कोयला, केश, राख, भुस्सी, रोई, सीप, लोहा मिले तो अशुभ। यदि काली ईंट मिले तो भूमि शुभ।

ग) एक अन्य परीक्षा में उत्तर दिशा की ओर वह गढ्ढा (उपर) खोदें। गढ्ढे की सारी मिट्टी निकाल कर दोबारा भरें यदि भरने के बाद मिट्टी शेष बचे तो भूमि उत्तम, यदि मिट्टी गढ्ढे में भरने पर भी मिट्टी न बचे और गढ्ढा पूरा नहीं भरता तो भूमि अशुभ

घ) शुभ भूमि→ चिकनी, उपजाऊ, घास पुष्प युक्त, समतल

अशुभ भूमि→ फटी हुई, कांटों से युक्त, दीमक से युक्त, ऊँची नीची

५५) मनुष्य शरीर में नक्षत्रों की स्थिति तथा वर्ण ज्ञान

(1)

१) अश्वि - पाँव के ऊपर (२) भरणी - पाँव के तलवे (३) कृत्तिका - सिर में ४) रोह - मस्तक में ५) मृगशि - भौंहों में ६) आर्द्रा - आँखों में ७) पुनर्वसु - नाक में ८) पुष्य - मुख में ९) आश - कानों में १०) मघा - ठोडी (होठों में) ११) पूर्वा फाल्गु - दाएँ हाथ में १२) उफा - बाएँ हाथ १३) हस्त - ऊँगली में १४) चित्रा - गर्दन में १५) स्वा - छाती में १६) विशा - हृदय में १७) अनु - उदर में १८) ज्येष्ठा - दाएं आमाशय में १९) मूला - बाईं कुक्षि में २०) पूषा - पीठ में २१) उषा - रीढ़ में २२) श्रव - कमर में २३) धनि - गुदा में २४) शत - दाईं जंघा में २५) पूर्वा भाद्र - बाईं जाँघ में २६) उभा - पिंडलीयों में २७) रेवती - टखनों में। जन्मकालीन अथवा गोचरवश जब कोई क्रूर (पापी ग्रह) नक्षत्र में पीड़ित करता है तथा तब-२ शरीर के उस भाग में कष्ट उत्पन्न होता है।

लग्न राशि से वर्ण → ~~मेष~~ लग्न से लाल मिश्रित, वृष से पीला मिश्रित श्वेत, मिथुन से विविध मिश्रित सफेद, कर्क से नीला मिश्रित सफेद, सिंह से गन्दमी, कन्या से ~~श्वेत मिश्रित श्या~~ श्याम मिश्रित सफेद, तुला से कालिका युक्त सफेद, वृश्चिक से ललिमा युक्त सफेद, धनु से पीत वर्ण युक्त सफेद, मकर से चितकबरा सफेद, ~~मकर~~ कुम्भ में आकाश सदृश नीला, मीन से पीत युक्त गौर वर्ण। इसी भांति लग्न राशि और लग्नेश के स्वरूप के अनुसार जातक के रूप-रंग का ज्ञान। इसके अतिरिक्त लग्न पर ग्रहों की दृष्टियों का भी प्रभाव।

ग्रहों से वर्ण →

सूर्य से रक्त-श्याम (गंदमी), चन्द्र से गौर, मंगल से लाल, बुध से दूर्वादल के समान श्याम मल, गुरु सुवर्ण (बादामी), शुक्र से नीलिमा युक्त सफेद, शनि से श्याम वर्ण, राहु से कृष्ण

एवं केतू से धूम्रवर्ण। बुध-शुक्र एक साथ हों तो गौरवर्ण न होते हुऐ भी सुन्दर आकृति। लग्न या लग्नेश पर पाप ग्रह की दृष्टि तो जातक के सौन्दर्य में कमी।

शरीर पर व्रण तिलादि जिस अंग का विचार करना हो, उस अंग की राशि जिस प्रकार की ह्रस्व, दीर्घ होगी तथा उसमें रहने वाले ग्रह जैसे होंगे वैसी ही स्थिति (ह्रस्व, दीर्घ) उस अंग की होगी

द्वादश भावों से अंग ज्ञान → लग्न की राशि से सिर, द्वितीय की राशि से मुख, तीसरे भाव की राशि से वक्षस्थल तथा फेफड़े, चौथे भाव की राशि से हृदय और छाती, पंचम भाव की राशि से कुक्षि और पीठ, छठे भाव की राशि से कमर और आंते, सप्तम भाव की राशि से नाभि और गुप्तांग के बीच का स्थान, अष्टम से गुप्तांग, नवम से ऊरु और जंघा, दशम स्थान से टेहुना, एकादश स्थान की राशि से पिंडलियां, द्वादश से पाँव का विचार

राशि के अनुसार अंगादि → 1) मेष से मुख, मस्तिष्क 2) वृष से नेत्र, जिह्वा, कंठ, भुजाऐं 3) मिथुन से हाथ, कंधे, हृदय 4) कर्क से पीठ 5) सिंह से कमर, पीठ, मेरुदंड 6) कन्या से नाभि, पेट 7) तुला से नाभि के नीचे, गुर्दे 8) वृश्चिक से मूत्रेन्द्रिय, जननेन्द्रिय, गुदा आदि 9) धनु से जँघाऐं, नितम्ब 10) मकर से दोनों घुटने 11) कुम्भ से दोनों पिंडलियां 12) मीन से पैर। ~~जिस राशि में बालक का जन्म फिर क्रम से~~ जो भाव अशुभ ग्रह युक्त हो तो उपर्युक्त अंग में रोग।

पृ(6) ग्रहों के यंत्र → ①

इन यन्त्रों को अष्टगंध की स्याही तथा अनार की कलम द्वारा भोजपत्र पर लिखकर सोना, चांदी, तांबे के तावीज में रखकर गले में धारण करें अथवा पुरुष दाईं भुजा तथा स्त्री बाईं भुजा

में धारण करें।

सूर्य यंत्र → शुक्ल पक्ष के रविवार के दिन कृतिका, उफा, उषा नक्षत्र में लाल डोरे या लाल रुमाल में ताबीज रखकर (पिछली विधि अनुसार) अपने पास रखें। प्रातः धारण करने से पूर्व "ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः" मंत्र का पाठ करें, हजारबार सोने/ताम्र की प्लेट या तावीज पर खुदवाऐं। तथा तांबे के तावीज में धारण करें।

६	१	८
७	५	३
२	९	४

चन्द्र यंत्र → शुक्ल पक्ष के सोमवार को रो, हस्त, श्रव नक्षत्र में सफेद डोरे में सांयकाल धारण करने से पूर्व "ॐ सों सोमाय नमः" या "ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रायेनमः" का ११००० पाठ करना शुभ है। (उपर्युक्त विधि)। चाँदी के तावीज पर खुदवाऐं तथा चाँदी में धारण करें।

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

मंगल यंत्र → शुक्ल पक्ष के मंगलवार को मृग, चित्र, धनि नक्षत्र में "ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः" का १० हजार की संख्या में पाठ करके। ताम्बे के तावीज/यंत्र में धारण करें। (उपर्युक्त विधि) तथा ताँबे पर खुदवाऐं।

८	३	१०
९	७	५
४	११	६

बुध यंत्र → शुक्ल पक्ष के बुधवार को आश, ज्ये, रेव नक्षत्र में हरे रुमाल में बुध के बीज मंत्र का ९ हजार की संख्या में पाठ करें (उपर्युक्त विधि)। सोने/चाँदी में

६	४	११
१०	८	६
५	१२	७

गुरु यंत्र → शुक्ल पक्ष के गुरुवार को पुर्नव, विशा, पूर्वा भाद्र को पीले रुमाल में बीज मंत्र का १६ हजार की संख्या में पाठ करें। सोने/चाँदी/ताँबे

१०	५	१२
११	६	७
६	१३	८

शुक्र यंत्र → शुक्ल पक्ष के शुक्रवार को पू.फा., पू.षा., भरणी नक्षत्र में शुक्र के बीजमंत्र द्वारा श्वेत चंदन और गंगाजल के तीन छींटे देकर गुलाबी रुमाल में लपेटकर रखें। जपसंख्या १६ हजार है। चाँदी पर

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	६

शनि यंत्र → कृष्ण पक्ष के शनिवार को पुष्, अनु, उभाद्र में सोने/सप्तधातु पर ३ माला के बीज मंत्र का पाठ उपरांत दानादि के बाद काले रुमाल में धारण करें।

१२	७	१४
१३	११	६
८	१५	१०

राहु यंत्र → कृष्ण पक्ष के शनिवार को आर्द्रा, स्वा, शतनक्षत्र में सोने/सप्तधातु के बाद इसके बीज मंत्र की कम से कम 3 माला के जप के पश्चात धूम्र वर्ण की रुमाल में धारण करें।

१३	८	१५
१४	१२	१०
९	१६	११

केतु यंत्र → शुक्ल पक्ष के मंगल या शनि को अश्वि, मघा, मूला में चाँदी/सप्तधातु में खुदवाकर राहु के बीज मंत्र की 3 माला के जाप पश्चात लहसुनिया जैसे रुमाल में धारण करें।

१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

विद्या का यंत्र →

~~[illegible]~~

~~1) सूर्य → इसे काल पुरुष की आत्मा कहा जाता है। यह गुलाबी वर्ण, वृद्ध (... वर्ष)~~,

५.३) शून्य संज्ञक राशि तथा मैत्रादि ज्ञान

(1) चैत्र में कुंभ, वैशाख में मीन, ज्येष्ठ में वृष, आषाढ़ में मिथुन, श्रावण में मेष, भाद्रपद में कन्या, अश्विन में वृश्चिक, कार्तिक में तुला, मार्ग में धनु,

पौष में कर्क, माघ में मकर तथा फाल्गुन में सिंह राशि शून्य संज्ञक है

राशि स्वरूप, स्वभाव, गुण धर्म

1) मेष → इसका स्वरूप (मेढ़ा) जैसा/उग्र स्वभाव [illegible]

पृष्ठ ८० का शेष गोरख पतरा

ति	मा											मास की तिथियों का फल	१प्रहर	२प्रहर	३प्रहर	४प्रहर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	बहुत सुख और अर्थ पूर्ण हो, क्लेश न हो	अर्थ	सुख	शोक	सुख
२	३	४										महाभय और जीवनाश, पछतावा	भय	क्लेश	सुख	सुख
३	४											कामना सिद्ध, अर्थ पूर्ण हो	लाभ	सुख	सुख	हानि
४												क्लेश, जीवनाश, कुशल से घर न आवे	क्लेश	शुभ	क्लेश	विनाश
५												वस्तुलाभ, संकट मिटे, मित्र मिलें	संकट	क्लेश	भाग्य	सुख
६												घर की चिन्ता, मित्र-संकट कदाचित् घर	संकट	क्लेश	भय	अर्थ
७												भाग्योदय, मित्र प्राप्ति, वस्त्रादि सहित घर	विनाश	लाभ	सुख	सुख
८												बहुत बुरा, जीवनाश	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य
९												कामना सिद्ध, अर्थपूर्ण, भाग्योदय	लाभ	भाग्य	मित्र	मित्र
१०												अशुभ किन्तु कुशल से घर	लाभ	सम्पूर्ण	मरण	कुशल
११												क्लेश, जीवनाश नहीं	मरण	अर्थ	कुशल	मरण
१२												अति शुभ	मरण	सुख	सुख	सुख

दोहद → दिग्दोहद → पूर्व में घी, दक्षिण में तिल और भात, पश्चिम में मत्स्य, उत्तर में दूध पीकर या देखकर यात्रा करें।

वारदोहद → रवि-श्रीखंड, सोम-चावल की खीर, मंगल-कांजी, बुध-चीनी मि[illegible] इलायची सहित दूध, गुरु-दही, शुक्र-कच्चा दूध, शनि-तिल का लड्डू

ध्यान दें → अपनी जन्मराशि लग्न से ८वां, १२वां लग्न न हो, वक्री ग्रह केन्द्र में न हो, उसका वार लग्न न हो, लग्न से सप्तम में शुक्र दशम में शनि, लग्न या अष्टम में न हो, शुभ ग्रह केन्द्र में हों।

(५) पूर्ण शौच

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
सुख	क्लेश	भीति	द्रव्यलाभ
शून्य	कष्ट	दरिद्र	समता
क्लेश	सुख	इष्ट लाभ	धनप्राप्ति
लाभ	सुख	मंगल	वित्तलाभ
लाभ	द्रव्य	धन	सुख
भीति	लाभ	मृत्यु	अर्थागम
लाभ	कष्ट	द्रव्य लाभ	सुख
कष्ट	सुख	क्लेश	सुख
सुख	लाभ	कार्य सिद्धि	कष्ट
क्लेश	कष्ट	अर्थ	धनप्राप्ति
मृत्यु	लाभ	द्रव्य लाभ	शून्य
शून्य	सुख	मृत्यु	अतिकष्ट

यह मुहूर्त राज है। इसे चन्द्र दोष, भद्रा, दिशाशूल, योगिनी, घात वार आदि का दोष नहीं। इसमें तिथि दोनों पक्षों की हैं। १३ का फल ३ के समान, १४ का ४ के समान तथा १५ का फल ५ के समान। अमावस वर्जित। ये रात्रि और दिन (दोनों) के प्रकार एक ही हैं। बांया स्वर चले तो पूर्व, ईशान, दांया स्वर चले तो दक्षिण, नैऋत्य को मत जाएं।

समयशूल → उषाकाल को पूर्व, गोधूलि को पश्चिम, अर्धरात्रि को उत्तर, मध्यान्तकाल को दक्षिण में न जाएं।

योगिनी फल → यदि योगिनी बाएं तो दुःख, पीछे तो मनवांछित पूर्ण, दाहिने धन देने वाली, सन्मुख मृत्यु देने वाली होती है

इसके साथ ही रवि - घी, सोम - दूध, मंगल - गुड़, बुध - तिल, गुरु - दही, शुक्र - यव तथा शनि - उड़द

तिथिदोहद → १- रूई का पत्ता, २- चावल का धोवन, ३- घी, ४- यवागू (अम्बिल), ५- मूंग, ६- स्वर्ण से धुला हुआ पानी, ७- अपूप, बीजपुर फल, ९- जल, १०- गोमूत्र, ११- यवक्षा सूत, १२- खीर, १३- ~~सत्त~~ गुड़, १४- सत्त, १५ या ३०- मूंग की खिचड़ी।

चन्द्रादि अशुभ दोष दिक्दोहत से योगिनी का दोष तिथि दोहद से शांत

चन्द्र →

जन्म राशि से इष्ट दिन की चन्द्रराशि गिनने पर जो संख्या उसमें चन्द्रा १ हो तो शुभ, २ में मन संतुष्टी, ३ में धन-प्राप्ति, ४ में लड़ाई, ५ में ज्ञान वृद्धि, ६ में धन-धान्य प्राप्ति, ७ में सम्मान, ८ में धन नाश, ९ में धर्म लाभ, १० में सिद्धि, ११ में जय-लाभ, १२ में हानि।
शुक्ल पक्ष में २, ५, ९ का भी शुभ।

चन्द्र निवास → मेष, सिंह, धनु पूर्व। कन्या, वृष, मकर दक्षिण। कुम्भ, तुला, मिथुन, पश्चिम। कर्क वृश्चिक मीन उत्तर।

फल → सम्मुख चन्द्र → धन लाभ, दाऐं → सुख सम्पत्ति, पीछे-शोक, वाम-धन क्षय

शुभ होरा → चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र की

शुभ तारा → जन्म नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनने पर जो संख्या आये उसे ९ से भाग दें शेष अगर १, २, ४, ६, ८, ० तो शुभ।

अशुभ शुभ लग्न → कुम्भ या कुम्भ का नवांश अशुभ।

शुभ लग्न → १, ४, ५, ७, ९, १० में शुभ ग्रह, ३/६/१०/११ में पाप ग्र

अशुभ → चंद्र १, ६, ८, १२ वें या किसी पापग्रह से युक्त। शनि १० वें, शुक्र ७ वें, गुरु ८ वें, अस्तमिती बुध १२ वें लग्नेश ६, ७, ८, १२ में हो।

(शेष पृष्ठ ५५ का)

(1) दो० → रोहिण्युत्तररेवत्यो मूलं स्वाति मृगो मघा।
अनुराधा च हस्त तत्र विवाहे मंगलप्रदाः ॥२॥

अर्थ→ रोहिणी, तीनों उत्तरा, मूला, स्वाती, रेवती, मृगशिर, मघा, अनुराधा, हस्त ये 11 नक्षत्र विवाह में शुभ हैं ॥१॥

(2) दो० → माघेधनवती कन्या फाल्गुने सुभागभवेत ।
वैशाखे च तथा ज्येष्ठपत्युरत्यन्तवल्लभा ॥२॥

अर्थ→ माघ मास में विवाह हो तो कन्या धनवती, फाल्गुन में सौभाग्यवती, वैशाख तथा ज्येष्ठ में पति को अत्यंत प्यारी ॥२॥

(3) दो० → आषाढे कुल वृद्धिः स्यादन्ये मासा ज्ञवर्जिता।
मार्गशीर्षमपीच्छन्ति विवाहे केचिकोविदा: ॥३॥

अर्थ→ जो आषाढ मास में विवाह हो तो कुल की वृद्धि

(4) दो० → अमावस्या च रिक्ता च वारवेला च जन्मभम् ।
गण्डान्तं क्रूरवारो ज्ञवर्जनीया: प्रयत्नत: ॥४॥

अर्थ→ अमावस, रिक्ता तिथि (४/६/१४), वारवेला, जन्म नक्षत्र, क्रूरवार (रवि, मंगल, शनि), गण्डमूल विवाह में वर्जित हैं ॥४॥

(5) दो० → नन्दाभद्रा जयारिक्तापूर्णा च तिथय: क्रमात ।
वारत्रयंसमावर्त्य तिथय: प्रतिपन्मुखा: ॥५॥,

अर्थ→ नन्दा, भद्रा, जय, रिक्ता, पूर्णा पांच तिथिऐं हैं जिनमें नन्दा - १/६/११, भद्रा - २/७/१२, जया - ३/८/१३, रिक्ता - ४/६/१४, पूर्णा - ५/१०/१५ है

(6) द्दो० → तुर्योर्कैसप्तमश्चन्द्रेद्वितीयो भूमिनन्दने ।
चन्द्रपुत्रेपंचम देवाचार्ये तथाऽष्टम: ॥६॥

अर्थ → अब वारवेला कहते हैं. रविवार को ४

जन्मकुण्डली में शनि का शुभग्रह से सम्बन्ध हो अथवा महादशा का अंतर शुभ हो तो ढैया या सादेसती का अशुफल कम हो जाती है। यदि चन्द्र शनि जन्म मे अशुभ ग्रहों से युक्त हो तो महान अशुभ

जप एवं यंत्र-मंत्र आदि की साधना के लिए १२ सायन संक्रांती तथा सूर्य चन्द्र के क्रांति साम्य

स्मार्तों के एकादशी व्रत के दूसरे दिन वैष्णवों का ॥ व्रत/ ग्रहण के सूतक में कुछ खाना-पीना चाहिए।

⑥ दो० → तुर्योऽर्कैसप्तमश्चन्द्रे द्वितीयो भूमिनन्दने ।
चन्द्रपुत्रे पंचम देवाचार्ये तथाऽष्टमः ॥६॥
अर्थ → अब वारवेला कहते हैं. रविवार को ४

जन्मकुण्डली में शनि का शुभग्रह से सम्बंध हो अथवा महादशा का अंतर शुभ हो तो ढैया। साढ़ेसती का अशुभफल कम हो जाता है। यदि चन्द्र शनि जन्म में अशुभ ग्रहों से युक्त हो तो महान अशुभ

~~जप एवं यंत्र-मंत्र आदि की साधना के लिए १२ सायन संक्रांती तथा सूर्य चन्द्र के क्रांति साम्य~~

स्मार्तों के एकादशी व्रत के दूसरे दिन वैष्णवों को ॥ व्रत/ ग्रहण के सूतक में कुछ खाना-पीना चाहिए।

2½ मिनट = 1 पल

2½ घड़ी = 1 घंटा

130
18
18
15
1810

1 अंश = 4½ घड़ी

$4\frac{1}{2} \times 7 = \frac{9 \times 7}{2} = \frac{63}{2} = 31.5$

= 31 घड़ी 30 पल

31 × 60 = 1860 + 30 = 1890

60) 1890 (3
180
90
60
30

1890) 3600

$2\frac{1}{4} = 30$ अंश

$\frac{1}{4} = \frac{30}{9} = \frac{30 \times 4}{9} = \frac{40}{3}$

शैव यंत्री → ① निरयण सक्रांति (6) ② दशान्तर दशमहाविद्या (7)

③ ग्रहण (12, 13, 14,) ④ शनि अढैया (15) तथा 16 पूरा ⑤ Page 19 (गुरुपुष्य)

⑥ Page 23 प्रेत योनि तथा आगे

ग्रहण 56-57 66-57

65 शनिवार क्षय-

28 मई (शुक्रवार, स्वाति नक्षत्र 66-57

(श्रीकृष्णोपदेशः । सर्या) 1-30 क्षय 28 मई

श्री कृष्णस्य उपदेशः 65 27 स्वाति नक्षत्र

28 मई (शुक्रवार, स्वाति

1 दिन = $13\frac{1}{3}$ अंश

1 अंश = $\frac{1}{\frac{40}{3}} = \frac{3}{40} = \frac{3}{40}$ दिन

$= \frac{3}{40} \times 60 = \frac{9}{2}$ घडी

अर्थात 1 अंश = 4½ घडी (प्रति) (कतु)

$\frac{9}{2} \times 7 = \frac{63}{2}$

$\frac{63}{2}$) 60 घडी

113 3.5 3600

315) 36000

315

0450

315

1350

945

405

घर बैठे (शेष) - Page 37, 38, 39, 40, 41, 42 - 3

43) वास्तु, शास्त्र (68) Underline (12)
42) ग्रहों की शांति (60) Underline (29)
41) व्रत (53) Underline (10) क्रम में नया भरें।
40) कर्म (53) Underline (1)
39) धर्म मेरी (45) Underline (6)

दीवाली को मत सि...

शेष (मंत्री) → 122, [illegible], [illegible], 128 (...च), 132, 85, Page 110 या 38 Page, 142 to 145
140, बालारिष्ट (134)
138, Page 134 (कहीं संयोग) प्रेत योनी, क्लिष्ट रोग निवारक (Page 22, 23), निरयण (6), सायन (24)
ग्रहण का स्नतक (14), शनि ढैया (15, गुरु पुष्य योगादि (19)
Check → 4, 6 Page 69, Underline Page 46 (कापी में)

घर बैठे → (41, 42, 43, 44) Page 85 चन्द्र राशि प्रवेश तथा भद्रा

1. किन भावों को कितने ग्रह देखते हैं कि उतनी संतान
2. घर कीलने का तरीका
3. होलाष्टक
4. वर्ष का राजा - मंत्री तथा फल
5. इष्ट और...
6. शुभ ग्रह की दृष्टि तथा स्थान अशुभ का भी
7. वर्ण ज्ञान (राशि) गणेशाय नमः
8. चन्द्र की अवस्था नव वर्ष प्रवेश
9. मकर संक्रान्ति को दिनमान
10. भाव में रोग, दवाई और स्नान
11. प्राचीन ग्रह, कलयुग में मनुष्य का आकार,

कालदर्शक
(7) वजन (स्मृति) का ज्ञान (किन भावों में रोग आदि)
मारकेश
(8) उदय ग्रह का फल
(16) ग्रह उच्च नीच फल
(17) चन्द्र नाडी सूर्य नाडी
लाभ को
मारकेश

शेष पंत्री 146, 161 (पूरा), 162, 153, 156, 157, 163, 167,
171, 173, 174 (योगिनी), 178 (मारकेश दशाफल; भाग्य बाधा), 182, 184, 185
186 (पूर्ण), 187, 188 (दोष फल), 189 (किसी ग्रह की आरंभ गति)
, 192, 199, 193, 200, 201, 202, 203, 204, 206 | विषकन्या (126)

110, 111, 25, 26, 27

चन्द्र का वृश्चिक में फल, 62, 93, 94, 63 (दौलतपका (85), 87, 106 (मृत्युभाव), अग्नि लिंग (117)

चौर का रोगादि, 122, 132, 127 (यात्रा (फल)), कारक ग्रह तथा फलित, 138, 140, स्थानान्तरण के योग फल

पंत्री में शेष — 128 (अशौच 25, 26, 27, स्तम्भादि (46), 57,
62 (2nd), 63, 87, 93, 94, 106, 111, 110

5-11-28

24102 214420

7164
×30
214920

23447
6
20682

विज्ञान — 12 × 24102

20682
×12
41364
20682×
248184
24102
7164

24102
× 2

55-57
1-30
59-60
4-3

4017
24102

6857 Dr
60
3960 (4017)
57

3357

उत्तराद्ध (12), पूर्वार्द्ध (15) कारक, राशि बलवान, Page 16 प्रश्न 12 (iv)

प्रश्न 13 12,3, मुख्य ग्रह क्या है। यंत्री पृष्ठ 26, 27 (ग्रहों का भाव अशुभ) वर्ष का मंत्री, राजा, प्रश्न व्यक्ति का पता कि किस (रंग) व्यक्ति ने चोरी, Page 66 यंत्री किल्ल, पृष्ठ 110, ~~यंत्री का पृष्ठ~~ 123, 124, 125

128, 132 यंत्री में, पृष्ठ 127 दिशा, कारक पृष्ठ 16, वर्णा Page 138, 2nd Part

Page 140, 143, 144, 145, 150, ||| 182, 184, 84,

192, 193, 199। आगे कीलिकृत संज्ञा पृष्ठ 72 पर

57-27
60

~~तुलसी का चौरा, गोल, वैधा Page 68~~

~~पंचरत्नी, सर्प, सर्पों की, सुपारी साकुरा, सूर्य वेधी, चन्द्रवेधी, ५,५ Page 69~~

~~3416~~ 24102

~~Check 4/4 Page 64~~

~~Page 70~~

~~... के कुछ ... Page~~

3442
235

~~2602~~

~~कर्णवेधी Page 72~~

~~स्निग्ध, कांतियुक्त, कनेर का पुष्प, सूर्य की होरा, अग्निमंत्र, अनामिका माल~~

~~आर्द्रा, सूर्य योगकारक > 60~~

~~ताण्डव, कनिष्ठिका > 61~~

~~सिंधुरी, हिमल, सिगरक > 62~~

~~पाण्डु, तर्जनी > 63~~

~~मंदाकिनी, मध्यमा, Ring > Page 64~~

५ अंश छन्मानो

मेष | वृष कन्या (१ २ ३)

1. Page 29 · (१८) (२०) (२१)
2. किन तीज भातों को कितने मह देखते हैं कि इतनी संतान इसकी होती है?
3. घर कीलने का तरीका
4. वर्ष का राजा - मन्त्री का फल — होलाष्टका
5. दूध - औंता
6. राजा ग्रह का दृष्टि तथा स्थान, उशोग का और (पत्री) फल)
7. वर्ण ज्ञान (राशि) — ०/१६/२९
8. चन्द्रमा की अवस्था — (Page 110 व 38 Page (भाग) पर)
9. मकर संक्रांति को दिनमान
10. भात में रोग, दवाई ज्ञान

 रेत योनि (२३) तथा क्लीव रोग (पत्री) | , Page 24 रोग निवारक
12. प्रदोष व्रत, निरयण (6), सायन (२४) क्या है —
13. कलयुग में मनुष्य का आकार
14. ग्रहण का सूतक (१४)
15. शनि अढैया विचार (१५)
16. गुरु पुष्य योगादि (१५) , 128 Page 118, 111
17. Page 25 (~~अरिष्टकाल शान्ति, औषधि स्नान, मन्त्र~~ पूर्ण
18. Page 26, 27 पूरा
19. चन्द्र का वृश्चिक राशि में फल

Page 62 2nd Part, Page 93, 94

रवि पुष्य, गुरु पुष्य (१७), Page 62 (करणादि)

~~वृष का~~ 63, होलाष्टका (85), 87, 93, 94, मूल ... (१०६)

111, 110 अभिजित (१७), Page 110 / ग्रह ...

शोध 122, 123, 126, 128, उपयोग

132

134

~~शोध सूत्र~~

~~शोध Page 122~~

~~शोध Page 122~~

Check 4/9 Page 69 123

Outline Page 126

Page 125

बार

चौहान

सूर्या

Surya

20 X 30

EXERCISE NOTE BOOK

Price Rs : 12.50

NAME__________
CLASS__________
SUBJECT__________ SEC.__________
SCHOOL__________

वृक्ष उगाओ - पर्यावरण बचाओ

CHAUHAN
Industries, Ynr.

चौहान

सूर्या

Surya

20 X 30

EXERCISE NOTE BOOK

Price Rs : 12.50

NAME____________________

CLASS____________________

SUBJECT____________ SEC.________

SCHOOL____________________

वृक्ष उगाओ - पर्यावरण बचाओ

CHAUHAN
Industries, Ynr.